वीशस्थानक तप विधी

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथाय नमः
श्री लब्धि भुवनतिलक गुरुवे नमः

प्रेरक -

पू. कर्नाटक केशरि
आचार्य श्री भद्रंकर
सूरिश्वरजी महाराज

संपादक -

पू. पंन्यास प्रवर
श्री पुण्यविजयजी
गणीवर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री विजय भुवनतिलकसूरीश्वर जैन ग्रंथमाला

छाणी के

: प्राप्य-- पुस्तको :

१) अंतरिक्ष तीर्थ महात्म्य (संस्कृत)
२) तत्त्वन्याय विभाकर भाग १, २
३) ,, सटीक भाग १
४) दशवैकालिक सूत्र, ५) उत्तराध्ययन सूत्र
६) भुवन काव्य केलि (संस्कृत) ७) ललितविस्तरा भाग १, २
८) भगवद्भक्ति (स्नात्रपूजा आदि नोटेशन)
९) भुवनबोध (आध्यात्मिक लेख संग्रह)
१०) ल. मृत्यु क्षण काव्य (संस्कृत) ११) अरिहंत आराधना
१२) नवपद आराधन विधि १३) छाणी शतकम्
१४) अक्षयनिधि तपो विधान १५) विविध भाषामें नवकारमंत्र,
१६) संयमना ओवारे १७) प्रव्रज्याना पुनितपंथे,
१८) आत्मनिदर्शन, १९) शत्रुंजय गुणगुंजन
२०) पच्चक्खाणदर्शन २१) जैन बाल बोधी
२२) अध्यात्मसार (प्रेशमें)

: प्राप्तिस्थान :

भुवन — भद्रंकर साहित्य प्रचार केन्द्र
C/o. V. V. VORA
34, KRISNAPPA NAICAN ST.
MADRAS 600 001

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीश स्थानक तप विधि

- प्रेरक -

पू. कर्नाटक केसरी आचार्य
श्री भद्रंकर सुरीश्वरजी महाराज

- संपादक -

पू. पंन्यास श्री पुण्यविजयजी गणीवर

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वी
श
स्था
न
क
त
प
वि
धि

प्रकाशक

भुवन भद्रंकर साहित्य प्रचार केंद्र

व्ही. व्ही. वोरा

३४, कृष्णाप्पा नायकन स्ट्रीट

मद्रास, ६०० ००१

प्राप्तिस्थान :

लब्धिभुवन जैन साहित्य सदन

शा. राजेश नटवरलाल

भुवनतिलकनगर, छाणी ३९१७४०

●

भुवन तिलक कृपा मंदीर

वर्धमान जे. मेहता

जैन मंदीर, इस्लामपुर जि. सांगली

मूल्य : रु. १-३०

(एक रुपया तीस पैसे)

वीर संवत	विक्रम संवत	लब्धि संवत
२५०५	२०३५	१९
आ. सु. १		सन १९७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री वीशस्थानक यन्त्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदना

प्रेरक और संपादक को

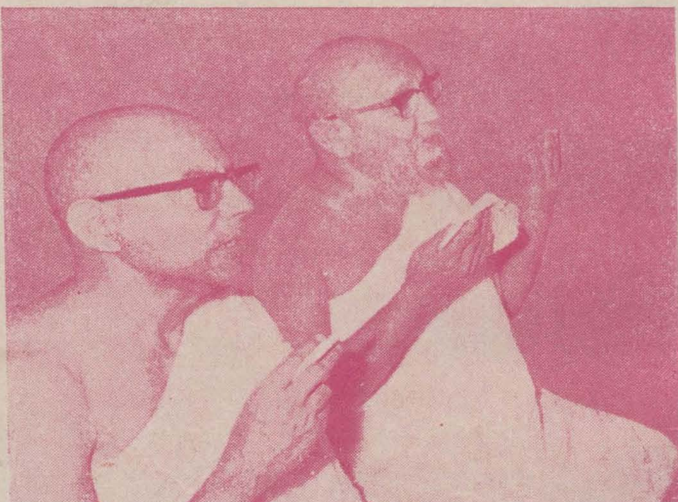

पूज्य पन्यासप्रवर
श्री पुण्यविजयजी गणीवर

पूज्य कर्नाटक केशरि आचार्य
श्री भद्रंकर सूरिश्वरजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री वीशस्थानक तप आराधन विधि.

साधु साध्वी जो अे तप करे तो जे पदना जेटल गुण होय तेटला लोगस्सनो काउस्साग, तेटला खमासमण अने अें पदनी बीश नवकारवाली गणे. उपरांत अवकाश मलतो होय तो त्रण कालना देववंदन पांच शक्रस्तव, त्रण चैत्यवंदन अने आठ स्तुतिओ बडे करे.

आ तपना करनारा श्रावक श्राविका सवार सांज प्रतिक्रमण करे, वे वखत पड़िलेहण करे, त्रिकाल पूजा करे, ब्रह्मचर्य पाले. असत्य, चोरी नो त्याग अने रागद्वेषनी मंदता करे. बने तेटलो आरंभनो त्याग करे, न बने तो उदासीन भावथी, लूखा परिणामथी पोतानो निभाव करी ले. बाकीनो विधि-काउस्सग्ग, खमासमण, देववंदन, वीश नवकारवाळी विगेरे ऊपर कह्या प्रमाणे करे, शक्ति होय तो ते तप संबंधी उपवासने दिवसे देरासरमां पदना गुण प्रमाणो साथीआ करी तेनी ऊपर तेटलां फ़ल, नैवेद्य अने द्रव्यादिक चड़ावे.

अेवी रीते अेक अेक पदना आराधन माटे वर्तमान कालानुसारे यथाशक्ति वीश अट्ठम, अथवा छट्ठ, अथवा उपवास, अथवा आयंबिल, नीवी के अेकासणा करे. अेकासणाथी ओछो तप कराय नहि.

प्रथम शुभ दिवस, बार, नक्षत्र, चंद्रबल जोइने गुरु पासे विधि सहित आ तप उच्चरे अने शरु करे जघन्य थी बे महिनामां अेक ओली करे, उत्कृष्ट थी छ महिनामां अेक ओली पूर्ण करे. छट्ठ अट्ठमथी करनार अेक वर्षमां एक ओली पूर्ण करे. तप पूरो थाय त्यारे गुरुमुखे धारी लइने यथाथशक्ति उजमण करे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम अरिहंत पद आराधन विधि

परम पंच परमेष्ठि मां परमेश्वर भगवान ।
चार निक्षेपे ध्याइओ, नमो नमो श्री जिनभाण ॥

नवकारवाली ॐ नमो अरिहंताणं अे पदनी वीश गणवी.

अरिहंतपदना बार गुण होवाथी १२ खमासमण नीचे प्रमाणे गुण कहीने आपवां

गुणना नाम

१ श्री अशोकवृक्षप्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः

२ श्री पंचवर्णजानुदघ्नपुष्पप्रकारप्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः

३ श्री अतिमधुरद्राक्षमाधुर्यं तोऽपि मधुरतमदिव्यध्वनिप्रतिहार्य-शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

४ श्री हेमरत्नजडितदण्डस्थितात्युज्ज्वलचामरयुगलवीजितव्यजन क्रियायुक्तप्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः

५ श्री सुवर्णरत्नजड़ितसदासहचारिसिंहासनसत्प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः

६ श्री तरुणतरणितेजसोऽप्यतिभास्करतेजोयुक्तभामंडलप्रातिहा-र्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः

७ श्री आकाशस्थितदुन्दुभिप्रभृत्यनेकवादित्रवादनरूपसत्प्रातिहा-र्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः

८ श्री मुक्ताजालझुम्बनकयुक्तछत्रत्रयसत्प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९ श्री स्वपरापायनिवारकातिशयधराय श्री मदर्हते नमः
श्री पंचत्रिंशद्वाणीगुणयुक्ताय सुरासुरदेवेन्द्रनरेन्द्राणां पूज्याय
श्री मदर्हते नमः
११ श्री सर्वभाषानुगामिसकलसंशयोच्छेदकवचनातिशयाय श्री-
मदर्हते नमः
१२ श्री लोकालोकप्रकाशककेवलज्ञानरूपज्ञानातिशयेश्वराय श्री-
मदर्हते नमः

अे प्रमाणे खामसमण दइने, पछी भगवाननी सामे अथवा उपाश्रय मां स्थापनाजी सामे इरियावही पडिक्कमी, अेक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहीं खमासमण दइ इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् ! अरिहंत पद आराधनार्थ काउस्सग्ग करु ? अेम कही आदेश मांगे. (गुरु बेठा होय तो 'करेह' कहे) अेटले पोते 'इच्छ' कही वंदणवत्तियाअे०, अन्नत्थ. कही २४ अथवा १२ लोगस्सनो काउस्सग्ग मौन पणे करे, काउस्सग्ग मां लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' सुधी चिंतवे. पछी नमो अरिहंताण' कही, काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहे. पछी अेक खमासमण दइ 'विधि करतां अविधि थइ होय तो मिच्छामि दुक्कड" अेम कहें. गुरुनो योग न होय तो स्थापनाजी सामे आदेश मांगी 'इच्छं.' कहीने आ प्रमाणे विधि करे.

आ पदनुं ध्यान उज्ज्वल वर्णे करवुं
आ पदनो आराधना करवाथी देवपाल तीर्थङ्कर थया छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ द्वितीय सिद्धपद आराधन विधि

गुण अनंत निर्मल थया, सहज स्वरूप उजास।
अष्ट कर्ममल क्षय करी; भये सिद्ध नमो तास।

सिद्धपदना ३१ गुण होवाथी खमासमण ३१ नीचे प्रमाणे कहीने आपे अने २० नवकारवाली नमो सिद्धाणं पदनी गणे.

१ मतिज्ञानावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
२ श्रुतज्ञानावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
३ अवधिज्ञाननावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
४ मनःपर्यवज्ञानावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
५ केवलज्ञानावरणीयकर्मरहिताय श्रीसिद्धाय नमः
६ निद्रादर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
७ निद्रानिद्रादर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
८ प्रचलादर्शनावरनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
९ प्रचलाप्रचलादर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
१० थीणद्धिदर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
११ चक्षुदर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
१२ अचक्षुदर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
१३ अवधिदर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः
१४ केवलदर्शनावरणीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५ सातवेदनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

१६ असातवेदनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

१७ दर्शनमोहनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

१८ चारित्रमोहनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

१९ नरकायुःकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२० तिर्यंगायुःकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२१ मनुष्यायुःकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२२ देवायुःकर्मरहिता श्री सिद्धाय नमः

२३ शुभनामकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२४ अशुभनामकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२५ उच्चैगोंत्रकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२६ नीचगोंत्रकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२७ दानान्तरायकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

२८ लाभान्तरायकर्मरहिताय श्री सिद्धात नमः

२९ भोगान्तरायकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

३० उपभोगान्तरायकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

३१ वीर्यान्तरायकर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः

आ प्रमाणे खमासमण दइने पछी सिद्धना १५ भेद होवाथी १५ लोगस्स नो काउस्सग्ग करे. आ पदनुं ध्यान रक्तवर्णे करे. आ पदनी आराधना करवाथी हस्तिपाल राजा तीर्थंकर थया छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ तृतीय प्रवचन पद आराधन विधि

भावामय औषधसमी, प्रवचन अमृत वृष्टि
त्रिभुवन जनने सुखकारी; जय जय प्रवचन दृष्टि

आ पदनी २० नवकारवालीॐनमो पवयणस्स अेम कहा गणे.

आ पदना गुण १२ अथवा २७ होवाथी १२ अथवा २ लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. खमासमण २७ नीचे प्रमा कहिने आपे.

१ सर्वतःप्राणातिपातविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
२ सर्वतो मृषावादविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
३ सर्वतोऽदत्तादानविरताय श्रीप्रबचनाय नमः
४ सर्वतो मैथुनविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
५ सर्वतःपरिग्रहविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
६ देशतः प्राणातिपातविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
७ देशतो मृषावादविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
८ देशतोऽदत्तादानविरताय श्रीप्रवचनाय नमः
९ देशतो मैथुनविरताय श्री प्रवचनाय नमः
१० देशतः परिग्रहविरताय श्री प्रवचनाय नमः
११ दिशिपरिमाणव्रतवताय श्री प्रवचनाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२ भोगोपभोगपरिमाणव्रतयुक्ताय श्रीप्रवचनाय नमः

१३ अनर्थदण्डविरताय श्रीप्रवचनाय नमः

१४ सामायिकव्रतयुक्ताय श्रीप्रवचनाय नमः

१५ देशावगाशिकव्रतयुक्ताय श्रीप्रवचनाय नमः

१६ पोसहोपवासव्रतयुक्ताय श्रीप्रवचनाय नमः

१७ अतिथिसंविभागव्रतयुक्ताय श्रीप्रवचनाय नमः

१८ विधिसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः

१९ वर्णिकसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः

२० भयसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः

२१ उत्सर्गसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः

२२ अपवादसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः

२३ उभयसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः

२४ उद्यमसूत्रागमाय श्रीप्रवचनाय नमः

२५ सर्वनयसमुद्घात्मकाय श्रीप्रवचनाय नमः

२६ सप्तभंगीरचनात्मकाय श्रीप्रवचनाय नमः

२७ द्वादशांगगणिपिटकाय श्रीप्रवचनाय नमः

आ पदनुं ध्यान उज्ज्वल वर्णे करवु. आ पदनुं ध्यान करवाथी जिनदत्त शेठ तीर्थङ्कर पदवी ने पाम्या छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ चतुर्थ आचार्य पद आराधन विधि.

छत्रीश छत्रीशी गुणो, युगप्रधान मुणीद.
जिनमत परमत जाणता' नमो नमो ते सूरीद.

आ पदना ३६ गुण होवथी काउस्सग्ग ३६ लोगस्सनो करवो. २० नवकारवाली ॐ नमो आयरियाणं ए पदनी गणवी खमासमण ३६ नीचे प्रमाणे कहीने आपवा.

१ प्रतिरूपगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
२ तेजस्विगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
३ युगप्रधानागमाय श्रीआचार्याय नमः
४ मधुरवाक्यगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
५ गम्भीरगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
६ सुबुद्धिगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
७ उपदेशतत्पराय श्रीआचार्याय नमः
८ अपरिश्राविगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
९ चन्द्रवत्सौम्यस्वगुणधाराय श्रीआचार्याय नमः
१० विविधाभिग्रहमतिधराय श्रीआचार्याय नमः
११ अविकथकगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
१२ अचपलगुणधराय श्रीआचार्याय नमः
१३ संयमशीलगुणधराय श्रीआचार्याय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४ श्री प्रशान्तहृदयाय श्रीमदाचार्याय नमः

१५ ,, क्षमागुणधराय श्रीमदाचार्याय नमः

१६ ,, मार्दवगुणधराय श्रीमदाचार्याय नमः

१७ ,, आर्जवगुणधराय श्रीमदाचार्याय नमः

१८ ,, निर्लोभितागुणधराय श्रीमदाचार्याय नमः

१९ ,, तपोगुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः

२० ,, संयमगुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः

२१ ,, सत्यधर्मयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः

२२ ,, शौचगुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः

२३ ,, आकिंचन्यगुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः

२४ ,, ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्रीमदाचार्याय नमः

२५ ,, अनित्यभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

२६ ,, अशरणभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

२७ ,, संसारभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

२८ ,, अेकत्वभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

२९ ,, अन्यत्वभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

३० ,, अशुचिभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

३१ ,, आश्रवभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

३२ ,, संवरभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

३३ ,, निर्जराभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

३४ ,, लोकस्वभावभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५ ,, श्री बोधिदुर्लभभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः
३६ ,, धर्मसाधकअरिहंतदुर्लभभावनाभाविताय श्रीमदाचार्याय नमः

आचार्यपदनु ध्यान पीतवर्णे करवुं अे पदनुं ध्यान करवाथी पुरुषोत्तम राजा तीर्थंकर थया छे.

अथ पंचम स्थविर पद आराधन विधि

तजी परपरिणति रमणता, लहे निज भावस्वरू स्थिर करता भविलोकने; जय जय स्थविर अन

आ पदनी २० नवकारवाली ॐनमो थेराणं आ पद बोल गणवी. आ पदना आराधन माटे १० लोगस्सनो काउसग करवे आ पदना १० खमासमण नीचे प्रमाणे बोलीने आपव

१ लौकिकस्थविरदेशकाय श्रीलोकोत्तारस्थविराय नमः
२ देशस्थविरदेशकाय श्रीलोकोत्तरस्थविराय नमः
३ ग्रामस्थविरदेशकाय श्रीलोकोत्तरस्थविराय नमः
४ कुलस्थविरदेशकाय श्रीलोकोत्तरस्थविराय नमः
५ लौकिककुलस्थविरदेशकाय श्रीलोकोत्तारस्थविराय नमः
६ लौकिकगुरुस्थविरदेशकाय श्रीलोकोत्तारस्थविराय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७ श्री लोकोत्तरश्रीसंघस्थविराय नमः
८ ,, लोकोत्तरपर्यायस्थविराय नमः
९ ,, लोकोत्तरश्रुतस्थविराय नमः
१० ,, लोकोत्तारवयस्स्थविराय नमः

आ पदनुं ध्यान गौरवर्णे करवुं. आ पदनुं आराधन करवाथी पद्मोत्तर राजा तीर्थङ्कर थया छे.

अथ षष्ठ उपाध्याय पद आराधन विधि.

बोध सूक्ष्म विणा जीवने, न होय तत्त्वप्रतीत।
भणे भणावे सूत्रने जय जय पाठकगीत ॥

आ पदनी नवकारवाली २० ॐ नमो उवज्झायाणं अे पदवडे गणवी. आ पदना गुण २५ होवाथी २५ लोगस्सनो काउसग्ग करवो. खमासमण २५ नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा

१ श्री आचारांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
२ ,, सुअगडांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
३ ,, ठाणांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
४ ,, समवायांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
५ ,, विवाहपन्नतिअङ्गश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः
६ ,, ज्ञाताधर्मकथाङ्गश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७ श्री उपासकदशांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

८ अंतगडदशांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

९ अनुत्तरोववाईअंगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

१० प्रश्नव्याकरणांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

११ ,, विपाकांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१२ ,, उववाइउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१३ ,, रायपसेणिउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१४ ,, जीवाभिगमउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१५ ,, पन्नवणाउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१६ ,, जंबूद्वीपपन्नत्तिउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१७ ,, चन्दपन्नतिउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१८ ,, सूरपन्नत्तिउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

१९ ,, निरयावलीउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

२० ,, कप्पिआउपांगश्रुतपाठक श्री उपाध्यायेभ्यो नमः

२१ ,, पुप्फिआउपांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

२२ ,, पुप्फचूलिआउपांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

२३ ,, वन्हिदशाउपांगश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

२४ ,, द्वादशांगीश्रुतपाठक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

२५ ,, द्वादशांगीश्रुतार्थअध्यापक श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

आ पदनुं ध्यान नीलवर्ण वडे करवुं आ पदना आराधनथी श्री महेंद्रपाल तीर्थङ्कर थया छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ सप्तम साधु पद आराधन विधि .

स्याद्वाद गुण परिणाम्यो' रमता समता संग ।
साधे शुद्धानंदता, नमो साधु शुभरंग ॥

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ए पद वडे गणवी. आ पदना आराधननो काउस्सग्ग २७ लोगस्सनो करवो. आ पदना २७ खमासमण नीचे प्रमाणे पदो बोलीने आपवा.

१ पृथ्विकायरक्षकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
२ अप्कायरक्षकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
३ तेउकायरक्षकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
४ वायुकायरक्षकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
५ वनस्पतिकायरक्षकेभ्यः श्री श्रर्वसाधुभ्यो नमः
६ त्रसकायरक्षकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
७ सर्वतः प्राणातिपातविरतेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
८ सर्वतः मृषावादविरतेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
९ सर्वतोऽदत्तादानविरतेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
१० सर्वतो मैथुनात् विरतेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः
११ सर्वतः परिग्रहात् विरतेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२ सर्वतो रात्रिभोजनात विरतेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

१३ क्रोधादिकषायचतुष्कनिग्रहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

१४ श्रोत्रेन्द्रियविषयनिग्रहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

१५ चक्षुरिन्द्रियविषयनिग्रहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

१६ घ्राणेन्द्रियविषयनिग्रहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

१७ रसनेन्द्रियविषयनिग्रहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

१८ स्पर्शनेन्द्रियविषयनिग्रहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

१९ शीतादिपरीषहसहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

२० क्षमादिगुणधारकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

२१ भावविशुद्धेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

२२ मनोयोगशुद्धेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

२३ वचनयोगशुद्धेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

२४ काययोगशुद्धेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

२५ मरणान्तउपसर्गसहकेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

२६ अंगोपांगसंकोचनसंलीनतागुणयुक्तेभ्यः श्रीसर्वसाधुभ्यो नमः

२७ निर्दोषसंयमयोगयुक्तेभ्यः श्री सर्वसाधुभ्यो नमः

आ पदनुं ध्यान श्यामवर्ण वडे करवुं आ पदनुं आराधन करवाथी श्री वीरभद्र तीर्थङ्कर थया छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ अष्टम ज्ञान पद आराधन विधि.

अध्यातम ज्ञाने करी; विघटे भव भ्रमभीति।
सत्य धर्म ते ज्ञानछे, नमो नमो ज्ञाननी रीति ॥

आ पदनी २० नमकारवाली ॐ नमो नाणस्स ए पदवडे गणवी, आ पदना आराधन माटे ५१ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो खमासमण ५१ नीचे प्रमाणे पद बोलीने आपवा.

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
२ रसनेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
३ घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
४ श्रोत्रेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नम
५ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
६ रसनेन्द्रियअर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
७ घ्राणेन्द्रियअर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
८ चक्षुरिन्द्रियअर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
९ श्रोत्रेन्द्रियअर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
१० मनोऽर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
११ स्पर्शनेन्द्रियइहासम्यक् श्री मतिज्ञानाय नमः
१२ रसनेन्द्रियइहासम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
१३ घ्राणेन्द्रियइहासम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४ चक्षुरिन्द्रियइहासम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
१५ श्रोत्रेन्द्रियइहासम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
१६ मनइहासम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
१७ स्पर्शनेन्द्रियअपायसम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
१८ रसनेन्द्रियअपायसम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
१९ घ्राणेन्द्रियअपायसम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
२० चक्षुरिन्द्रियासम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
२१ श्रोत्रेन्द्रियापायसम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
२२ मनोऽपायसम्यक् श्रीमतिज्ञानाय नमः
२३ स्पर्शनेन्द्रियधारणाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
२४ रसनेन्द्रियधारणाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
२५ घ्राणेन्द्रियधारणाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
२६ चक्षुरिन्द्रियधारणाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
२७ श्रोत्रेरिन्द्रियधारणाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
२८ मनोधारणाय श्रीमतिज्ञानाय नमः
२९ अक्षर–श्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३० अनक्षर–श्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३१ संज्ञिश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३२ असंज्ञिश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३३ सम्यक्श्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३४ मिथ्यात्वश्रीश्रुतज्ञानाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५ सादिश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३६ अनादिश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३७ सपर्यवसितश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३८ अपर्यवसितश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
३९ गमिकश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
४० अगमिकश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
४१ अंगप्रविष्टश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
४२ अनंगप्रविष्टश्रीश्रुतज्ञानाय नमः
४३ आनुगामिकश्रीअवधिज्ञानाय नमः
४४ अननुगामिकश्रीअवधिज्ञानाय नमः
४५ वर्धमानश्रीअवधिज्ञानाय नमः
४६ हीयमानश्रीअवधिज्ञानाय नमः
४७ प्रतिपातिश्रीअवधिज्ञानाय नमः
४८ अप्रतिपातिश्रीअवधिज्ञानाय नमः
४९ ऋजुमतिश्रीमनःपर्यवज्ञानाय नमः
५० विपुलमतिश्रीमनःपर्यवज्ञानाय नमः
५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय नमः

आ पदनुं ध्यान उज्ज्वलवर्णे करवुं, आ पदनुं आराधन करवाथी जयंतराजा तीर्थङ्कर थयाछे.

अथ नवम दर्शन पद आराधन विधि

लोकालोकना भाव जे केवलि भाषित जेह.
सत्य करीं अवधारतो, नमो नमों दर्शन तेह.

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमो दंसणस्स अे पदवडे गणवी. समकितना ६७ बोल होवाथी ६७ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. खमासमण ६७ नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा

१	तत्त्वपरिचयरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
२	तज्ज्ञसेवारूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
३	कुलिंगिसंगवर्जनरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
४	मिथ्यादर्शनिसंसर्गवर्जनरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
५	जिनागमश्रवणपरमइच्छारूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
६	धर्मकरणे तीव्रइच्छारूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
७	वैयावृत्त्यकरणतत्पररूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
८	श्री अरिहंतविनयकरणरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
९	,, सिद्धविनयकरणरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
१०	,, जिनप्रतिमाविनयकरणरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
११	,, श्रुतज्ञानविनयकरणरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
१२	,, चारित्रधर्मविनयकरणरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
१३	,, साधुमुनिराजविनयकरणरूप	श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४ श्री आचार्यविनयकरणरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
१५ ,, उपाध्यायविनयकरणरूप श्री सम्यगदर्शनगणधराय नमः
१६ ,, प्रवचनरूपसंघविनयकरणरूप श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
१७ ,, सम्यग्दर्शनविनयकरणरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः

१८ मनःशुद्धिरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
१९ वचनशुद्धिरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
२० कायशुद्धिरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
२१ शंकादूषणत्यागरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
२२ आकांक्षादूषणत्यागरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
२३ विचिकित्सादूषणत्यागरूप श्री सम्ययग्दर्शनगणधराय नमः
२४ मिथ्यादृष्टिसंसगवर्जनरूप श्रीसम्यदग् दर्शनगुणघराय नमः
२५ मिथ्यादृष्टिप्रशंसावर्जनरूप श्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
२६ श्री प्रवचन प्रभावक श्री सम्यग्दर्शनगणधराय नमः
२७ ,, धर्नकथक प्रभावक श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
२८ ,, वादि प्रभावक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
२९ ,, निमित्तक प्रभावक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३० ,, तपस्वि प्रभावक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३१ ,, विद्या प्रभावक श्री सम्यग दर्शनगणधराय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२ श्री सिद्ध प्रभावक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३३ ,, कवि प्रभावक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३४ ,, स्थैर्यभूषणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३५ ,, प्रभावनाभूषणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३६ क्रियाकुशलभूषणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३७ अंतरंगभक्तिभूषणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधारय नमः
३८ तीर्थसेवाभूषणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
३९ शमलक्षणधराक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
४० संवेगलक्षषणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नमः
४१ निर्वेदलक्षणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नम
४२ अनुकंपालक्षणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नम
४३ आस्तिक्यता लक्षणधारक श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नम
४४ अन्यदेवनमनत्यागरूप श्री सम्यग् दर्शनगुणधराय नम
४५ अन्यदर्शनि गृहीतजिनप्रतिमा नमन त्यागरूप ,,
४६ मिथ्यादर्शनि सह संलापत्यागरूप ,,
४७ मिथ्यादर्शनि सह संलापत्यागरूप ,,
४८ मिथ्यादर्शनिनां आहारदानत्यागरूप ,,
४९ मिथ्यादर्शनिनां आहारदानत्यागरूप ,,
५० राजाभियोगेणं आगारवान् ,, ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१ बलाभियोगेणं आगारवान् श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५२ गणाभियोगेणं आगारवान् श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५३ देवाभियोगेणं आगारवान् श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५४ गुरुनिग्गहेणं आगारवान् श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५५ वित्तिकांतारेणं आगारवान् श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५६ धर्मरूपवृक्षस्य मूलभूत श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५७ मोक्षरूपनगरस्य द्वारभूत श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५८ धर्मरूपवाहनस्य पीठभूत श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
५९ विनयादिगुणस्य आधारभूत श्रीसम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
६० धर्मरूपअमृतस्य पात्रभूत श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
६१ रत्नत्रयीणां निधानभूत श्री सम्यग्‌दर्शनगुणधराय नमः
६२ अस्ति आत्मा–इति निर्णयरूप ,,
६३ नित्यानित्य आत्मा इति निर्णयरूप ,,
६४ जीवः कर्मणः कर्ता इति निर्णयरूप ,,
६५ जीवः कर्मणो भोक्ता इति निर्णयरूप ,,
६६ अस्ति जीवस्य मोक्षः–इति निर्णयरूप ,,
६७ मोक्षस्य अस्ति उपायः इति निर्णयरूप ,,

आ पदनुं ध्यान उज्ज्वल वर्णे करवुं. आ पदनुं आराधन करवाथी श्री हरिविक्रम राजा तीर्थंकर थया छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ दशम विनयपद आराधन विधि

शौचमूलथी महागुणी, सर्व धर्मनो सार;
गुण अनंतनो कंद ओ, नमो विनय आचार.

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमः विनयगुणसंपन्नस्म अे पदवडे गणवी. विनयपदा ५२ प्रकार होवाथी ५२ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. खमासमण नीचे प्रमाण पदो कहीने ५२ आपवा.

१ श्रीतीर्थङ्कराणांअनाशातनारूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्योनमः
२ ,, तीर्थङ्कराणाँ भक्तिकरणरूप श्री विनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः
३ ,, तीर्थङ्कराणां वहुमानकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः
४ ,, तीर्थंकराणां स्तुतिकरणरूप श्री विनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः
५ ,, सिद्धानां अनाशातनारूप श्री विनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः
६ ,, सिद्धानां भक्तिकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः
७ ,, सिद्धानां स्तुतिकरणरूप श्रीबिनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः
८ ,, सिद्धानां बहुमानकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः
९ ,, सुविहितचांद्रादिकुलानां अनाशातनारूप श्रीविनयगुण प्राप्तेभ्यो नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१० श्री सुविहितचांद्रादिलानां भक्तिकरणरूप श्रीविनयगुण-प्राप्तेभ्यो नमः

११ ,, सुविहितचांद्रादिकुलानां बहुमानकरणरूप श्रीविनय-गुणप्राप्तेभ्यो नमः

१२ ,, सुविहितचांद्रादिकुलानां स्तुतिकरणरूप श्री विनयगुण-प्राप्तेभ्यो नमः

१३ ,, कोटिकादिगणोत्पन्न सुविहितमुनीनां अनाशातनाकर-णरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

१४ ,, कोटिकादिगणोत्पन्न सुविहितमुनीनां भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

१५ ,, कोटिकादिगणोत्पन्न सुविहितमुनीनाँ बहुमानकरणत-त्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

१६ ,, कोटिकादिगणोत्पन्न सुविहितमुनीनां स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

१७ ,, चतुर्विधसंघस्य आनाशातनाकरणरूप श्रीविनयगुण-प्राप्तेभ्यो नमः

१८ ,, समस्तसंघस्य भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

१९ ,, समस्तसंघस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२० ,, समस्तसंघस्य स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१ श्री शुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्य अनाशातनाकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२२ ,, शुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्य भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२३ ,, शुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२४ ,, शुद्धागमोक्तक्रियाकारकस्य स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२५ ,, जिनोक्तधर्मस्य अनाशातनाकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२६ ,, जिनोक्तधर्मस्य भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२७ जिनोक्तधर्मस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२८ ,, जिनोक्तधर्मस्य स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

२९ ,, ज्ञानगुणप्राप्तस्य अनाशातनाकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

३० श्री ज्ञानगुणप्राप्तस्य भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

३१ ,, ज्ञानगुणप्राप्तस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३ श्री ज्ञानगुणप्राप्तस्य स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्ते-
भ्यो नमः

३३ ,, ज्ञानस्य अनाशातनाकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

३४ ,, ज्ञानस्य भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

३५ ,, ज्ञानस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्रातेभ्यो नमः

३६ ,, ज्ञानस्य स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

३७ श्रीमदाचार्यस्य आनाशातनरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्योनमः

३८ श्री मदाचार्यस्य भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो
नमः

३९ श्रीमदाचार्यस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो
नमः

० श्रीमदाचार्यस्य स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

४१ ,, स्थविरमुनीनां अनाशातनारूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो
नमः

४२ ,, स्थविरमुनीनां भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो
नमः

४३ ,, स्थविरमुनीनां बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्ते
भ्यो नमः

४४ ,, स्थविरमुनीनां स्तुतिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो
नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५ श्रीमदुपाध्यायस्य आनाशातनाकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

४६ श्रीमदुपाध्यायस्य भक्तिकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

४७ श्रीमदुपाध्यायस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

४८ श्रीमदुपाध्यायस्य स्तुतिकरणतत्पर श्री विनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

४९ श्रीमद् गणावच्छेदकस्य अनाशातनाकरणरूप श्रीविनयगुणप्राप्तिेभ्यो नमः

५० श्रीमद् गणावच्छेदकस्य भक्तिकरणतत्पर श्री विनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

५१ श्रीमद् गणावच्छेदकस्य बहुमानकरणतत्पर श्रीविनयगुणप्राप्तेभ्यो नमः

५२ श्रीमद् गणावच्छेदकस्य स्तुतिकरणतत्पर श्री विनयगुण प्राप्तेभ्यो नमः

आ पदनुं ध्यान उज्जवल वर्णे करवुं आ पदनुं आराधन करवाथी धनशेठ तीर्थंकर पद पाम्या छे.

आ विनयपदना पांच, दश, तेर, बावन अने छासठ भेद थाय छे, तेमांथी अहीं ऊपर प्रमाणे ५२ भेद लख्या छें.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[अ]थ अेकादश चारित्र पद आराधन विधि

[र]त्नत्रयीं विणु साधना, निष्फल कही सदीव;

[भ]ावरयणानुं निधान छे; जय जय संयम जीव.

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमो चारितस्स अे पदवडे [ग]णवी. आ पदना ७० भेद होवाथी काउस्सग्ग ७० लोगस्सनो [क]रवो. आ पदना खमासमण ७० नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा

१ [स]र्वतः प्राणातिपातविरमणव्रतधराय श्रीचारित्राय नमः
२ सर्वतः मृषावादविरमणव्रतधराय श्रीचारित्राय नमः
३ सर्वतः अदत्तादानविरमणव्रतधराय श्रीचारित्राय नमः
४ सर्वतः मैथुनविरमणव्रतधराय श्रीचारित्राय नमः
५ सर्वतः परिग्रहविरमणव्रतधराय श्रीचारित्राय नमः
६ सम्यक्क्षमागुणधराय श्रीचारित्राय नमः
७ सम्यग्मार्दवगुणधराय श्रीचारित्राय नमः
८ सम्यगार्जवगुणधराय श्री चारित्राय नमः
९ सम्यग्मुक्तिगुणधराय श्री चारित्राय नमः
[१]० सम्यक्तपोगुणधराय श्री चारित्राय नमः
[१]१ सम्यक्संयमगुणधराय श्री चारित्राय नमः
[१]२ सम्यक्सत्यगुणधराय श्री चारित्राय नमः
[१]३ सम्यक्शौचगुणधराय श्री चारित्राय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४ सम्यग्अकिंचनगुणधराय श्री चारित्राय नमः
१५ सम्यग्ब्रह्मचर्यगुणधराय श्री चारित्राय नमः
१६ पृथ्वीकायजीवरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
१७ अप्कायरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
१८ तेउकायरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
१९ वाउकायरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
२० वनस्पतिकायरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
२१ बेइन्द्रियरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
२२ तेइन्द्रियरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
२३ चउरिंद्रियरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
२४ पंचेन्द्रियरक्षकाय श्री चारित्राय नमः
२५ अजीवसंयमाय श्री चारित्राय नमः
२६ प्रेक्षासंयमाय श्री चारित्राय नमः
२७ उपेक्षासंयमाय आरंभउत्सूत्रभाषणत्यागाय श्रीचारित्राय नमः
२८ प्रमार्जनसंयमाय श्री चारित्राय नमः
२९ पारिष्ठापनसंयमउपयोगयुक्ताय श्री चारित्राय नमः
३० मनःसंयमयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः
३१ वचनसंयमयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः
३२ कायसंयमयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः

---

१. यतनापूर्वक वर्तवु ते.
२. मनगुप्ति. ३. वचनगुप्ति ४. कायगुप्ति.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३ श्री आचार्यस्य वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
३४ ,, उपाध्यायस्य वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
३५ ,, तपस्वि-वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
३६ ,, लघुशिष्यस्य वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
३७ ,, ग्लानमुने वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
३८ ,, स्थविरस्य वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
३९ ,, समनोज्ञअेकसामाचारिकारकस्य वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
४० ,, श्रमणसंघस्य वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
४१ ,, चांद्रादिकुलस्य वैयावच्चकरणरूप श्री चारित्राय नमः
४२ ,, कोटिकादिगणस्य वैयावच्चकरणरूप श्रीचारित्राय नमः
४३ स्त्रीपशुपंडकरहितवसतिवासि शुद्धब्रह्मव्रतयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः
४४ स्त्रीसहसरागवार्तालापवर्जकाय श्री ब्रह्मव्रतयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः
४५ स्त्रीआसनवर्जकाय श्रीब्रह्मव्रतयुक्ताय श्री चारित्राय-नमः
४६ स्त्रीसरागअंगोपांगनिरीक्षणवर्जकाय श्री ब्रह्मव्रतयुक्ताय श्री चारित्राय नमः
४७ कुड्यांतरितस्त्रीपुरुषक्रीडास्थानवर्जकाय श्री ब्रह्मव्रतयुक्ताय श्री चारित्राय नमः
४८ गृहस्थाश्रमे स्त्रीसंगक्रीड़ाविलासस्मरणवर्जकाय श्री ब्रह्मव्रतयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९ सरसआहारवर्जकाय श्री ब्रह्मव्रतयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५० अतिमात्राहारवर्जकाय श्री ब्रह्मव्रतयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५१ विभूषणादिशरीरशोभावर्जकाय श्री ब्रह्मव्रतयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५२ श्री सम्यग् ज्ञानगुणयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः

५३ ,, सम्यग् दर्शनसहिताय श्री चारित्राय नमः

५४ ,, सम्यक् चारित्रगुणयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५५ ,, अणसणतपोयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५६ ,, उणोदरींतपोयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५७ ,, वृत्तिसंक्षेप अभिग्रहधारकतपोयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५८ ,, रसत्यागरूपतपोयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

५९ ,, लोचादिकायक्लेशसहनरूप तपोयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः

६० ,, संलीनता इन्द्रियवश्यकारकाय श्रीचारित्राय नमः

६१ ,, प्रायश्चित्तग्रहणरूप अभ्यंतरतपोयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

६२ ,, विनयकरणरूप अभ्यंतरतपोयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः

६३ ,, वैयावच्चाकरणरूप अभ्यंतरतपोयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४ ,, स्वाध्यायकरणरूप अभ्यंतरतपोयुक्ताय श्री चारित्राय नमः

६५ ,, शुभध्यानकरणरूप अभ्यंतरतपोयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः

६६ ,, कायोत्सर्गकरणरूप अभ्यंतरतपोयुक्ताय श्रीचारित्राय नमः

६७ क्रोधजयकराय श्री चारित्राय नमः

६८ ,, मानजयकराय श्री चारित्राय नमः

६९ ,, मायाजयकराय श्री चारित्राय नमः

७० ,, लोभजयकराय श्री चारित्राय नमः

आ पदनुं ध्यान उज्ज्वल वर्णे करवुं आ पदना आराध- नथी वरुणदेव तीर्थङ्कर थया छे.

थ द्वादश ब्रह्मव्रतधारी पद आराधन विधि

जनप्रतिमा जिनमंदिरां, क्रंचननां करे जेह.
ह्मव्रतथी बहु फल लहे; नमो नमो शियलसुदेह.

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमो बंभवयधारिणं अे दवडे गणवी. आ पदना आराधन माटे काउस्सग्ग १८ लोगसनो करवो. खमासमण १८ नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा,

मनसा औदारिकविषय असेवनरूप श्रीब्रह्मचारिभ्यो नमः

मनसा औदारिकविषय असेवानरूप श्रीब्रह्मचारिभ्यो नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३ मनसा औदारिकविषय अननुमोदनरूप श्रीब्रह्मचारिभ्योनमः

४ वचसा औदारिकविषय असेवनरूप श्रीब्रह्मव्रतधारकेभ्यो नमः

५ वचासा औदारिकविषय असेवावनरूप श्रीब्रह्मव्रंतधारकेभ्यो नमः

६ वचासा औदारिकविषय अननुमोदनरूप श्रीब्रह्मव्रतधारकेभ्यो नमः

७ लायेन औदारिकविषय असेवनरूप श्रीब्रह्मचार्यधारकेभ्यो नम

८ कायेन औदारिकविषय असेवावनरूप श्रीब्रह्मचर्यधारकेभ्योनम

९ कायेनऔदारिकविषय अननुमोदनरूप श्रीब्रह्मचर्यधारकेभ्यो न

१० मनसा वैक्रियविषय असेवनरूप श्रीब्रह्मचारिभ्यो नमः

११ मनसा वैक्रियविषय असेवावनरूप श्री ब्रह्मचारिभ्यो नम

१२ मनसा वैक्रियविषय अननुमोदनरूप श्रीब्रह्मचारिभ्यो नम

१३ वचसा वैक्रियविषय असेवनरूप श्रीब्रह्मव्रतधारकेभ्यो न

१४ वचसा वैक्रियविषय असेवावनरुप श्रीब्रह्मव्रतधारकेभ्यो न

१५ वचसा वैक्रियविषय अननुमोदनरूप श्रीब्रह्मव्रतधारकेभ्यो न

१६ कायेन वैक्रियविषय असेवनरूप श्रीब्रह्मचर्यधराय नमः

१७ कायेन वैक्रियविषय असेवावनरूप श्रीब्रह्मचर्यधराय नम

१८ कायेन वैक्रियविषय अननुमोदनरूप श्रीब्रह्मचर्यधराय नम

आ पदना आराधनथी चंद्रवर्मा राजा तीर्थङ्करपदने पम्या छे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ त्रयोदश क्रियापद आराधन विधि

आत्मबोध विणु जे क्रिया, ते तो बालक चाल.
तत्त्वारथथी धारीओ; नमो क्रिया सुविशाल.

आ पदनी नवकारवाली २० ॐ नमो किरियाणं ओ पदवडे गणवी. आ पदना आराधन माटे काउस्सग्ग २५ लोगस्सनो करवो. खमासमण २५ नीचे प्रमाणेना शब्दो बोलीने आपवां.

१ अशुद्धकायिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
२ आधिकरणकक्रियाप्रवतनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
३ पारितानिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
४ प्राणातिपातिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
६ आरंभिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
६ पारिग्रहिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
७ मायाप्रत्ययिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
८ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
९ अप्रत्याख्यानक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१० दृष्टिजीक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११ स्पृष्टिज्ञीक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१२ प्रातीत्यकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१३ सामंतोपनिपातिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१४ नैसृष्टिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१५ स्वाहस्तिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१६ आनयनक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१७ विदारणिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१८ अनाभोगप्रत्ययिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
१९ अनवकांक्षाप्रत्ययिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
२० आज्ञापनप्रत्ययिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
२१ प्रायोगिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
२२ सामुदानिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
२३ प्रेमप्रत्ययिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
२४ द्वेषप्रत्यायिकक्रियाप्रवर्तनरहिताय श्रीक्रियागुणवते नमः
२५ इरियापथिकक्रियाप्रवर्तनशुद्धाय श्रीमहामुनये नमः

आ पदनुं आराधन करवाथी हरिवाहन राजा तीर्थंकर पद पाम्या छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ चतुर्दश तपपद आराधन विधि.

र्म खपावे चीकणा, भाव मंगल तप जाण.
वास लब्धि उपजे; जय जय तप गुणखाण

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमो तवस्स ओ पदवडे
णवी. आ पदना आराधननो काउस्सग्ग १२ लोगस्सनो करवो
। पदना खमासमण १२ नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा.

श्री अणसणाभिधतपोयुक्ताय श्रीबाह्यतपोगुणाय नमः
,, ऊनोदरीतपोयुक्ताय श्रीबाह्यतपोगुणाय नमः
,, वृत्तिसंक्षेपअनेकविधअभिग्रहधराय श्रीबाह्यतपोगुणाय नमः
,, रसत्यागरूपतपोयुक्ताय श्रीबाह्यतपोगुणाय नमः
,, कायकलेशलोचादिकष्टसहकाय श्रीबाह्यतपोगुणाय नमः
,, संलीनताशरीरसंकोचकाय श्रीबाह्यतपोगुणाय नमः
,, प्रायश्चित्तग्राहकाय श्रीअभ्यंतरतपोगुणाय नमः
,, विनयगुणयुक्ताय श्रीअभ्यंतरतपोगुणाय नमः
,, वैयावच्चगुणयुक्ताय श्रीअभ्यंतरतपोगुणाय नमः
,, सज्झायध्यानयुक्ताय श्रीअभ्यंतरतपोगुणाय नमः
,, आत्मध्यानरूप श्रीअभ्यंतरतपोगुणाय नमः
,, काउस्सग्गरूप श्रीअभ्यंतरतपोगुणाय नमः

आ पदनुं ध्यान उज्ज्वल वर्णे करवुं आ पदनुं आराधन
रवाथी कनककेतु राजा तीर्थंकर थया छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ पंचदश गोयमपद आराधन विधि

छट्ठ छट्ठ तप करे पारणुं, चउनाणी गुणधाम
ओ सम शुभपात्रकोनहीं, नमो नमो गोयमस्वाम,

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमो गोयमस्स ओ पदवडे गणवी. आ पदना आराधननो काउस्सग्ग ११ लोगस्सनो करवो आ पदना खमासमण १२ नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा.

१ ॐ ह्रीँ श्री गौतम गणधराय नमः
२ ॐ ह्रीँ ,, अग्निभूति गणधराय नमः
३ ॐ ह्रीँ ,, वायुभूति गणधराय नमः
४ ॐ ह्रीँ ,, व्यक्तस्वामि गणधराय नमः
५ ॐ ह्रीँ ,, सुधर्मस्वामि गणधराय नमः
६ ॐ ह्रीँ ,, मंडितस्वामि गणधराय नमः
७ ॐ ह्रीँ ,, मौर्यपुत्रस्वामि गणधराय नमः
८ ॐ ह्रीँ ,, अकंपितस्वामि गणधराय नमः
९ ॐ ह्रीँ ,, अचलभ्रातृस्वामि गणधराय नमः
१० ॐ ह्रीँ ,, मेतार्यस्वामि गणधराय नमः
११ ॐ ह्रीँ ,, प्रभासस्वामि गणधराय नमः
१२ ॐ ह्रीँ ,, चतुर्विंशति तीर्थंकरणां चतुर्दशशतद्विपंचाशः गणधरेभ्यो नमः

आ पदनुं आराधन करवाथी हरिवाहन राजा तीर्थंकर पदवी पा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ षोडश जिनपद आराधन विधि

दोष अढारे क्षय गया; उपना गुण जस अंग. वैयावच्च करीए मुदा; नमो नमो जिनपद संग.

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमः श्री विद्दमान जिनेश्वराय नमः अे पदवडे गणवी. काउस्सग्ग २० लोगस्सनो करवो. खमासमण २० नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा.

१ श्री सीमंधरजिनेश्वराय नमः
२ ,, युगमंधरजिनेश्वराय नमः
३ ,, बाहुजिनेश्वराय नमः
४ ,, सुबाहुजिनेश्वराय नमः
५ ,, सुजातजिनेश्वराय नमः
६ ,, स्वयंप्रभजिनेश्वराय नमः
७ ,, ऋषभाननजिनेश्वराय नमः
८ ,, अनंतवीर्यजिनेश्वराय नमः
९ ,, सुरप्रभजिनेश्वराय नमः
१० ,, विशालजिनेश्वराय नमः
११ ,, वज्रधरजिनेश्वराय नमः
१२ ,, चंद्राननजिनेश्वराय नमः
१३ ,, चंद्रबाहुजिनेश्वराय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४ श्री भुजगाजिनेश्वराय नमः
१५ ,, ईश्वरजिनेश्वराय नमः
१६ ,, नेमिप्रभजिनेश्वराय नमः
१७ ,, वीरसेनजिनेश्वराय नमः
१८ ,, महाभद्रजिनेश्वराय नमः
१९ ,, देवयशाजिनेश्वराय नमः
२० ,, अजितवीर्यजिनेश्वराय नमः

आ पदना आराधनथी जीमूतकेतु राजा तीर्थंकर पद पामेल छे

अथ सप्तदश संयमपद आराधन विधि.

शुद्धातम गुणमें रमे, तजी इन्द्रिय आशंस,
थिर समाधि संतोषमां, जय ज़य संयम वंश।

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमः श्रीसंयमस्स अे पद-वडे गणवी, आ पदना आराधननो काउस्सग्ग १७ लोगस्सनो करवो. आ पदना खमासमण १७ नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा.

१ सर्वतः प्राणातिपातविरताय श्रीसंयमधराय नमः
२ सर्वतो मृषावादविरताय श्रीसंयमधराय नमः
३ सर्वतः अदत्तादानविरताय श्रीसंयमधराय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४ सर्वतः मैथुनविरताय श्रीसंयमधराय नमः

५ सर्वतः परिग्रहविरताय श्रीसंयमधराय नमः

६ सर्वतः रात्रिभोजनविरमणव्रतधराय श्रीसंयमधराय नमः

७ इरियासमितियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

८ भाषासमितियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

९ अेषणासमितियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

० आदानभंडामत्तनिक्खेवणासमितियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

१ पारिष्ठापनिकासमितियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

२ मनोगुप्तियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

३ वचनगुप्तियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

४ कायगुप्तियुक्ताय श्रीसंयमधराय नमः

५ मनोदंडरहिताय श्रीसंयमधराय नमः

६ बचनदंडरहिताय श्रीसंयमधराय नमः

७ कायदंडरहिताय श्रीसंयमधराय नमः

आ पदनुं आराधन करवाथी पुरंदर राजा तीर्थंकर थया छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टादश अभिनवज्ञानपद आराधन वि

ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल
अजर अमरपद फल लहो, जिनवर पदवी फूल

आ पदवी २० नवकारवाली ॐ नमो अभिनवनाणस्स पदवडे गणवी, आ पदना आराधननो काउस्सग्ग ५ अथवा ५१ लोगस्सनो करवो. आ पदना खमासमण ५१ नीचे प्रणा बोलीने आपवा.

१	श्री आचारांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
२	,, सूअगडांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नम
३	,, स्थानांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
४	,, समवायांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
५	,, भगवतीसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
६	,, ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
७	,, उपासकदशांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
८	,, अंतगडदशांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
९	,, अनुत्तरोववाइअंगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
१०	,, प्रश्नव्याकरणांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
११	,, विपाकांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः
१२	,, उववाइउपांगसूत्र	श्रुतज्ञानाय	नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३ श्री रायपसेणीउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
१४ ,, जीवाभिगमउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
१५ ,, पन्नवणाउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
१६ ,, जंबुद्दीवपन्नत्तिउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
१७ ,, चंदपन्नत्तिउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
१८ ,, सूरपन्नत्तिउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
१९ ,, निरियावलिउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२० ,, पुष्फियाउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२१ ,, पुप्फचूलियाउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय ननः
२२ ,, कप्पियाउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२३ ,, वह्निदसाउपांगसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२४ ,, चउसरणपयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२५ ,, आउरपच्चक्खाणपयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२६ ,, महापच्चक्खाणपयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२७ ,, भत्तपरिज्ञापयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२८ ,, तंदुलवियालिपयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
२९ ,, चंदाविजयपयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
३० ,, गणिविज्जापयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
३१ ,, मरणसमाहिपयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः
३२ ,, संथारापयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नयः
३३ देवेन्द्रस्तवपयन्नासूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४ श्री दशवैकालिकमूलसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

३५ ,, आवश्यकमूलसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

३६ ,, पिंडनिर्युक्तिमूलसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

३७ ,, उत्तराध्ययनमूलसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

३८ ,, निशीथछेदसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

३९ ,, बृहत्कल्पछेदसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

४० ,, व्यवहारछेदसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

४१ पंचकल्पछेदसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

४२ ,, जीतकल्पछेदसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

४३ ,, महानिशीथछेदसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

४४ ,, नंदीसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

४५ ,, अनुयोगद्वारसूत्र श्रुतज्ञानाय नमः

४६ स्यादस्तिभंगप्ररूपकाय स्याद्वादश्रुतज्ञानाय नमः

४७ स्याद्नास्तिभंगप्ररूपकाय स्याद्वादश्रुतज्ञानाय नमः

४८ स्यादस्तिनास्तिभंगप्ररूपकाय स्याद्वादश्रुतज्ञानाय नमः

४९ स्यादस्तिअवक्तव्यभंगप्ररूपकाय स्याद्वादश्रुतज्ञानाय नमः

५० स्याद्नास्तिअवक्तव्यभंगप्ररूपकाय स्याद्वादश्रुतज्ञानाय नमः

५१ स्यादस्तिनास्तिअवक्तव्यभंगप्ररूपकाय स्याद्वादश्रुतज्ञानाय नमः

आ पदना आराधनथी सागरचंद तीर्थंकर पद पामेल छे आ पदनी महत्त्वतासूचक नीचे जणावेल पांच गाथाओ गुरुमुखती सांभलीने तेनो अर्थ तेनी नीचे लख्यो छे विचारवो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्रस्यार्थोभयस्याप्य–पूर्वस्यापि प्रयत्नतः
अन्वहं यदुपादानं, स्थानमष्टादशं हि तत् ।। १ ।।
नाणेन सव्वभावा, युज्झंति सुहुमबायरा लोऐ ।।
तुम्हा नाणकुसलेण, सिक्खिअव्वं पयत्तेण ।। २ ।।
अपूर्वज्ञानग्रहणं, महती कर्मनिर्जरा ।।
सम्यग्दर्शननैर्मल्यात्, कृत्वा तत्त्वप्रबोधनं ।। ३ ।।
छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं, अबहुसुअस्स जा सोही ।।
इत्तो अ अणंतगुणा, सोही जिमियस्स नाणिस्स ।। ४ ।।
अपूर्वज्ञानग्रहणात्तीर्थकृत्पदमुत्तमं ।।
लभते भावनायोगे, प्राणी सागरचंद्रवत् ।। ५ ।।

अर्थ–सूत्रनुं, अर्थनुं अने ते बंनेनुं पण जे अपूर्वनुं प्रयत्न वडे निरंतर ग्रहण करवुं ते अढारमुं अभिनव ज्ञानग्रहण पद छे १. ज्ञानवडें लोकमां रहेला सूक्ष्म बादर सर्व भाव जाणी शकाय छे. तेथी ज्ञानकुशल अेवा मनुष्ये अवश्य प्रयत्नवडे नवुं नवुं ज्ञान ग्रहण करवुं २. अपूर्व ज्ञान ग्रहण करवथी मोटी कर्मनी निर्जरा थाय छे वली सम्यग्दर्शननुं निर्मलपणुं थवाथी तत्त्वनो प्रबोध पण थाय छे .३ छठ्ठ अट्ठम दशम अने दुवालस विगेरे तप करवाथी अबहुश्रुतनी जेटली आत्मशुद्धि थाय छे. ते करतां दररोज जमनारा ज्ञानीनी अनंतगुणी शुद्धि ज्ञानना बलथी थाय छें. ४ अपूर्व ज्ञान ग्रहण करवथी शुभ भावनाना योगवडे प्राणी सागरचंद्रनी जेम तीर्थंकर पदने प्राप्त करे छे. ५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अेकोनविंशतितम श्रुतपद आराधन विधि.

वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन,
ध्याता ध्येयनी अेकता, जय जय श्रुतसुखलीनं.

आपदनी २० नवकार वाली ॐ नमो सुअस्स अे पदवडे गणवी.

आ पदना आराधन माटे २० लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

आ पदना खमासमण २० नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा.

१ श्री पर्यायश्रुतज्ञानाय नमः
२ ,, पर्यायसमासश्रुतज्ञानाय नमः
३ ,, अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः
४ ,, अक्षरसमासश्रुतज्ञानाय नमः
६ ,, पदश्रुतज्ञानाय नमः
५ ,, पदसमासश्रुतज्ञानाय नमः
,, ७ संघातश्रुतज्ञानाय नमः
८ ,, संघातसमासश्रुतज्ञानाय नमः
९ ,, प्रतिपत्तिश्रुतज्ञानाय नमः
१० ,, प्रतिपत्तिससामश्रुतज्ञानाय नमः
११ ,, अनुयोगश्रुतज्ञानाय नमः
१२ ,, अनुयोगसमासश्रुतज्ञानाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३ श्री पाहुडपाहुड श्रुतज्ञानाय नमः
१४ ,, पाहुडपाहुडसमासश्रुतज्ञानाय नमः
१५ ,, पाहुडश्रुतज्ञानाय नमः
१६ ,, पाहुडसमासश्रुतज्ञानाय नमः
१७ ,, वस्तुश्रुतज्ञानाय नमः
१८ ,, वस्तुसमासश्रुतज्ञानाय नमः
१९ ,, पुर्वश्रुतज्ञानाय नमः
२० ,, पूर्वसमासश्रुतज्ञानाय नमः

आ पदनुं शुभ भाववडे आराधन करवाथी रत्नचूड तीर्थंकर पद पाम्या छे.

२० वीशमा तीर्थपदना आराधननी विधि.

तीर्थयात्रा प्रभाव छे. शासन उन्नति काज.
परमानंद विलासता. जय जय तीर्थ जहाज़.

आ पदनी २० नवकारवाली ॐ नमो तित्थस्स ए पदवडे गणवी. आ पदनी आराधना माटे काउस्सग्ग ३८ लोगस्सनो करवो. खमासमण ३८ नीचे प्रमाणे बोलीने आपवा.

१ सर्वथा प्राणातिपातविरतिवत् श्रीसाधतीर्थगुणाय नमः
२ सर्वथा मृषावादविरमणवत् श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
३ सर्वथा अदत्तादानविरमणवत् श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
४ सर्वथा मैथुनत्यागवत् श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
५ सर्वथा परिग्रहत्यागवत् श्रीसाधतीर्थगुणाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६ समस्त पृथ्वीकायजीवरक्षकाय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
७ समस्त अप्‌कायजीवरक्षकाय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
८ समस्त तेजस्कायजीवरक्षकाय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
९ समस्त वायुकायजीवरक्षकाय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१० समस्त वनस्पतिजीवरक्षकाय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
११ समस्त त्रसकायजीवरक्षकाय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१२ सर्वथा क्रोधदोषरहिताय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१३ सर्वथा मानदोषरहिताय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१४ सर्वथा मायादोषरहिताय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१५ सर्वथा लोभदोषरहिताय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१६ सर्वथा रागांशदोषरहिताय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१७ सर्वथा द्वेषांशदोषरहिताय श्रीसाधुतीर्थगुणाय नमः
१८ सर्वसम्यक्त्वगुणजननी लज्जागुणयुक्ताय देशविरतिरूप श्री तीर्थगुणाय नमः
१९ दयागुणयुक्ताय देशविरतिरूप श्रीतीर्थगुणाय नमः
२० कुमतिकदाग्रहकुयुक्तिपक्षपातरहिताय मध्यस्थगुणयुक्ताय श्री देशविरतिरूप श्रीतीर्थगुणाय नमः
२१ सर्वमनवचनकाये क्रूरतादोषरहिताय सौम्यगुणयुक्ताय देशविरतिरूप श्रीतीर्थगुणाय नमः
२२ विद्वान् सर्वसम्यग्गुणरागरूप देशविरतिरूप श्री तीर्थगुणाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३ क्षुद्रतातुच्छतादोषरहित अतिगंभीर उदारतागुणसहित स्वपरभेदरहित परजनआदिसर्वजनोपकारि श्रीदेशविरति-रूप श्रीतीर्थगुणाय नमः

२४ पूर्वभवकृतदया धर्मफलेन सर्वजनदर्शनीय सर्वांगउपांगसंपूर्णांग शुद्धसंघयण धर्मप्रभावक देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

२५ पापकर्मवर्जित जगन्मित्र सुखोपासनीय सौम्यप्रकृति श्री देश विरतिरूप श्रीतीर्थगुणाय नमः

२६ द्रव्यक्षेत्रकाभावैः लोकविरुद्ध धर्मविरुद्धवर्जनरूप श्रीदेश विरतिरूप श्रीतीर्थगुणाय नमः

२७ मलिनक्लिष्टक्रूरतादोषरहित सदयमोज्ञरूप श्रीदेशविरतिरूप श्रीतीर्थगुणाय नमः

२८ इहपरलोकापायदायक राग, द्वेष, जन्म, जरा, मरण, दुर्गतिपातनरूप अड़सठ लौकिक तीर्थवर्जक श्रीदेशविरतिरूप श्रीतीर्थगुणाय नमः

२९ सर्वजनावंचक विश्वसनीय प्रशंसनीय भावैकसर्वजनधर्मोद्यमकारि देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३० स्वकार्यगौणगणक परकार्यमुख्यकर साधक सर्वजनउपादेयवचनरूप दाक्षिण्यवद् देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३१ यथातथ्यधर्मज्ञापक परविषयअद्वेषप्रकृति अनर्थवर्जक सौम्यरूपदृष्टिमध्यस्थ देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२ श्री धर्मतत्त्वज्ञापक शुभकथाकथक विवेकगुणोद्दीपक अशुभ-कथावर्जक देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३३ श्री आप्तधर्मशील परिवारकुटुंबअनुकूल विघ्नरहित धर्म-साधने साहाय्यकारि सुपक्षि देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३४ अतीतानागवर्तमानहेतु कारणकार्यदर्शि सर्वथा स्वाहित-कार्यकरणरूप दीर्घदर्शि देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३५ सर्वपदार्थगुणदोषज्ञायक सुसंगि विशेषज्ञ देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३६ वृद्धपरंपराज्ञायक सुसंगतिरूप वृद्धानुगामि देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३७ सर्वगणमूल रत्नत्रयी तत्त्वत्रयशुद्धिप्रापक विनयरूप देश-विरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

३८ श्रीधर्माचार्यस्य बहुमानकर्ता स्वल्पमपि उपकारकारिभ्यो आवस्मारक परोपकारकरणतत्पर कृतज्ञ स्वदोषरहितोपदे-शकरण शील श्री देशविरति श्रीतीर्थगुणाय नमः

आ पदनुं आराधन करवाथी मेरुप्रभ तीर्थंकर थया छे.

वीसमा पदनी अराधना करीने जैन तीर्थोनी यात्रा, श्रीसंघ-पूजा, स्वामीवात्सल्य, तीर्थोद्धार, रथयात्रा, दीनदुःस्थित अना-थादि सुखीकरण विगेरे कार्यो करीने जैन शासननी उन्नति करवी. जैनधर्मने दीपाववो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री वीशस्थानक तप संबंधी उजमणानी विगत

शक्ति होय तो २० नवा देरासर बंधाववां शक्ति होय तो २० जीर्णोद्धार कराववा. शक्तिवाने नीचे जणावेली दरेक वस्तु २०-२० मकवी.

उजमणामां मूकवानी वस्तुओ.

(देरासरने लगता उपगरणो.)

थाल, रकेबी, वाटकी, सुखडना ककडा, केशर-बरासना पडीकां, ओरशीया, जिनबिंब नवा. वीशस्थानकना गटा, सिद्धचक्रना गटा, मोरपींछी, थाली, दीवी फानस, धूपधाणा, दंडासणकलश, कलशा, प्याला, सिंहासन, बाजोठना त्रिक, घंट. झालर, घंटडी, त्रांबाकुंडी, आरती मंगलदीवा, पुंठीआ, चंदरवां तोरण धोतिआं, उत्तरासण, मुखकोष, अंगलुहणां, पाटलुहणां, जडेलांतिलक, मुकुट आभरणो, बालाकुंची, नवकारवाली, आचमनी, अष्टमंगलिक, सोनाना वरगनी अने रूपाना वरगनी थोकडीओ, वासकुंपी, चामर, छत्रना त्रिको ध्वजा, हांडा, अगरवत्तीनां पडीकां अगरनां पडीकां पाटला बाजोठी, विगेरे.

ज्ञानना उपकरणो.

शक्ति होय तो धर्मशालाओ अथवा उपाश्रयो २० कराववा स्थापनाचार्य, ठवणी, सापडा, सापडो. बाजोंठी, पुस्तक, पाठां, चाबखी, कवली, चंदरवा, पुंठीआ, तोरण, रुमाल,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाकू, कातर, लेखण, खडीआ, पांच पदनी टीप, नवपदनी टीप, पाटी, पुस्तकना डाबड़ा विगेरे- शक्तिवाने २० ज्ञान-भंडार कराववा.

चारित्रना उपकरणो

कटासणां, मुहपत्ति, चरवला, चरवली, चोलपट्टा, कपड़ कामली खभानी, डंड़ासण, सुपडी, डांड़ा, झोली, पड़ला पातरा, तरपणी, ठवणी, संथारीआ, नवकारवालीनो डाबड स्थापनाचार्यना डाबढ़ा कंदोरा माटे दोरा विगेरे.

अथ वीशस्थानकनुं चैत्यवंदन

पहेले पदे अरिहंत नमुं, १ बीजे सर्व सिद्ध२ ॥
त्रीजे प्रवचन मन धरो३, आचारज प्रसिद्ध४ ॥ १ ॥
नमो थेराणं पांचमे५ पाठक गुण छठ्ठे६ ॥
नमो लोए सव्व साहूणं,७ जे छे गुण गरिठ्ठें ॥ २ ॥
नमो नाणस्स आठमे,८ दर्शन मन भावो९ ॥
विनय करो१० गुणवंतनो, चारित्र पद११ ध्यावो ॥ ३ ॥
नमो बंभवयधारिणं१२, तेरमे किरियाणं१३ ॥
नमो तवस्स चउदमें १४, गोयम १५ नमो जिणाणं १६ ॥४॥
चारित्र१७ ज्ञान१८सुअस्स१९ने अ,नमो तित्थस्स २० जाणी ॥
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुखखाणी ॥ ५ ॥

अथ वीशस्थानक तपना काउसग्गनु चैत्यवंद

चोवीश पन्नर पीस्तालीशना, छत्राशनो करिये ॥
दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन धरीये ॥ १ ॥
पंच सड़सट्ठी दश वली, सित्तोर नव पणवीश ॥
बार अडवीश जोगस्स तणो, काउस्सग्ग थरो गुणीश ॥२॥
वीश सत्तर अेकावन्न, द्वादश ने पंच ॥
अेणि परे काउस्सग्ग जो करे, तो जाये भव संच ॥ ३ ॥
अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो' गुणि लेज्यो वीश ॥
वीश स्थानक अेम जाणीअे, संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥
भाव धरी मनमां घणो, जो अेक पद आराधे ॥
जिन उत्तम पद दद्मने, नमी निज कारज साधे ॥ ५ ॥

श्री वीश स्थानकनुं स्तवन

सदगुरु चरण नमो करीजी, समरी सरस्वती माता,
वीश स्थानक तप वरणवुंजी. समकितने अवदात,
मन मोहन जिनजी, हवे झाल्यो तुम हाथ, ते नवी छोडुं
साहिबाजी, विना सिध्ये निज काज. मन० १
पहेले पद अरिहंत नमोजी, बीजे सिद्ध अनंत,
त्रीजे पवयण मन धरोजी, चोथे सूरि गुणवंत. मन० २
थिविर नमो पद पांचमेंजी, पाठक प्रवचन जाण,
साधु नमो सवि सातमेजी, आठमे निरमल नाण मन० ३
समकित दरमण मन धरोजी, विनय करो गुणवंत,
चारित्रपद अगीयारमेजी, बारमें धरो ब्रह्मव्रत. मन० ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रियाशुद्धि कीजीअेजी, चौदमे तप निरधार;
पन्नरमे गौयम नमोजी, सोलमे जिनवर भाण. मन० ५
सत्तरमे संजम भणुजी .ज्ञान लहो गुण खाण;
सूत्र सिद्धांत ओगणीशमेजी, वीशमे तीरथनी जाव. मन० ६
चोवीश पंदर बारनोजी, छत्रीस दस पणवीश:
सगवीश पण सडसठतणोजी, दस सित्तेर नव पणवीश मन० ७
बार अडत्रीश चोवीस सत्तारजी, इगवन पीस्तालीश पांच,
अनुक्रमें काउस्सग्ग जे करेजी, ते पामें शिववास. मन० ८
खट मासे अेम कीजीयेजि, ओली एक सुजाण,
पडिक्कमणां दोय टंकनाजी; पडिलहण वे बार: मन० ९
देववंदन त्रण टंकनाजी, देवपूजे त्रिकाल,
गुणणुं गणो मन थिर करीजी, गुरु वेयावच्च सार. मन० १०
तपथी सवी संकट टलेंजी तपथी जाये क्लेश ;
तपथी मनवांछित फलजी; दुःख न पामे लेश. मन० ११
शुध्ध मने आराधतांजी; तीर्थंकर पद जास;
मोहन मुनिना हेमनेजी; द्यो समकित दुण पास. मन० १२

४ श्री वीश स्थानकनुं स्तवन

हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मांगुं वचन विलास जो,
वीशेरे तप स्थानक महिमा गाइशुं रे लोल;
हांरे मारे प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चौवीश जो
बीजे रे सिद्ध स्थानक पंदर भावशुं रे लोल.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हांरे मारे त्रीजे पवयण गणो लोगस्स पीस्तालीश जो,
चोथेरे आयरियाणं छत्रीशनो सही रे लोल,
हांरे मारे थेरणं पद पांचमे दश उदार जो,
छठ्ठे रे उवज्झायाणं जचवीशनो सही रे लोल. ॥ २ ॥
सातमे नमो लोअें सव्व साहु सतावीश जो,
अ ठमे नमो नाणस्स पंच भावशुं रे लोल,
हांरे नवमें दरिसण सडसठ मनने उदार जो,
दशमे नमो विणयस्य दश वखाणीअें रे लोल, ॥ ३ ॥
हांरे अग्यारमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तर जो,
बारमे नमो बंभस्स नव गणो सही रे लोल,
हांरे किरयाणं पद तेरमें वली पचवीश जो,
चौदमें नमो तवस्स बार गणो सही रें लोल. ॥ ४ ॥
हांरे पंदरमें नमो गोयमस्स अट्ठावीश जो,
नमो जिणाणं चउवीश गणशुं सोलमे रे लोल,
सत्तरमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तोर जो,
नाणस्सनो पद गणशुं अेकावन अढ़ारमें रे लोल. ॥ ५ ॥
हांरें ओगणोशमें नमो सुअस्स वीश पीस्तालीश जो,
वींशमे नमो तित्थस्स वीश प्रभावशुं रें लोल,
हांरें अें तपनो महिमा चारशें ऊपर वीश जो,
पट् मासे अेक ओली पूरी कीजियेरे लोल ॥ ६ ॥
हांरें तप करतां वली गणीअे दोय हज़ार जो,
नवकारवाली वीशे स्थानक भावशुं रे लोल,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हां रे प्रभावना संघ स्वामीवच्छल सार जो,
उन्नमणा विधि कीजे विनय लीजीअेरे लोल, ॥ ७ ॥
हां रे अे तपनो महिमा कहें श्री वीर जिनराय जो,
विस्तारे इस संबंध गोयम स्वामीने रे लोल,
हां रे तप करतां वली तीर्थङ्कर पद होय जो,
देव गुरु इम कांति स्तवन सोहामणो रे लोल. ॥ ८ ॥

अथ वीश स्थानकना तपनीं स्तुति

पूछे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा, पूजित अमर सूरिंदा ॥ केम निकाचे पद जिनचंदा, किण विध तप करतां भव फंदा, टाळे दुरित दंदा ॥ तब भाखे प्रभुजी गतनिंदा ॥ सुण गौतम वसुभूति नंदा, निर्मल तप अरविंदा ॥ वीश थानक तप करत महिंदा, जिम तारक समुदाये चंदा, तिम अे सवि तप इंदा ॥ १ ॥ प्रथम पदे अरिहंत नमीजे, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठविजे ॥ उपाध्याय ने साधु ग्रहीज, नाण दंसण पद विनय वहीजे अगीयारमे चारित्र लीजे ॥ बंधवयधारीण गणीजे, किरियाणं तवस्स करीजे गोयम जिणाणं लहीजे ॥ चारित्र नाण श्रुत तित्थस्स कीजे, त्रीजे भव तप करत सुणीजे, अे सवि जिन तप लीजे ॥ २ ॥ आदि नमो पद सघले ठवीश, बार पन्नर बार वली छत्रीश, दश पणवीश सगवीश ॥ पांच ने सडसठ तेर गणीश, सत्तर नव किरिया पचवीश, बार

अठ्ठावीश चउ वीश ।। सित्तेर इगवन्न पीस्तालीश, पांच-लोग-स्स काउस्सग्ग कहींश नोकारवाली वीश ।। अेक अेक पदे उपवास ज वीश, मास खटे अेक ओली करीश, इस सिध्धांत जगीश ।। ३ ।। शक्ते अेकासणुं तिविहार, छठ्ठ अठ्ठम मास-खमण उदार, पडिकमणां दोय वार ।। इत्यादिक विधि गुरु-गम धार, अेक पद आराधन भव पार उजमणुं विविध प्रकार ।। मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाइ शासन रखवाल, संघविघन–अपहार ।। खिमाविजय जस ऊपर प्यार, शुभ भाविअण धर्म आधार, वीरविजय जयकार ।।४।।

७. श्री वीश स्थानकनी स्तुति.

वीश स्थानक तप विश्वमां मोटो; श्री जिनवर कहे आपजी ।। वांधे जिनपद त्रीजा भवमां, करीने स्थानक जापजी थया थशे मवि जिनवर अरिहा, अे तपने आराधीजी ।। केवलज्ञान दर्शन सुख पाम्या, सर्वे टाली उपाधिजी ।। १ ।। अरिहंत सिध्ध पवयण सूरि स्थविर वाचक साधु नाणजी, दर्शन विनय चरण बंभ किरिया, तप करो गोयम ठाणजी ।। जिनवर चारित्र पंचविध नाण, श्रुत तीर्थ अेह नामजी ।। अे वीश स्थानक आराधे ते पामे शिवपद धामजी ।। २ ।। दोय काल पडिकमणुं पडिलेहण देवनदब त्रण वारजी ।। नोका-रवाली वीश गुणीजे, काउस्सग्ग गुण अनुसारजी ।। चरसो उपवासा करी चित्त चोखे, उजमणं करो सारजी । पडिमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरावो संघ भक्ति करे, अें विधि शस्त्र मोझारजी ।। ३ ।। श्रेणिक सत्यकी सुलसा रेवती, देवपाल अवदातजी ।। स्थानक तप सेवा महिमाअे थया जगमांहि विख्यातजी । आगमविधि सेवे जे तपिया, धन्य धन्य तस अवतारजी ।। विघ्न हरे तस शासनदेवी सौभाग्य लक्ष्मी दातारजी ।। ४ ।।

८. श्री वीश स्थानकनी सज्झाय.

अरिहंत पहले स्थाने गणीअे, बीजे पद सिद्धाणं, त्रीजे प्रवचन आचार्य चोथे, पांचमे पदवी थेराणं रे ।। १ ।। भवी आं वीश स्थानक तप कीजे. ओली वीश करीजेरे, भ० गुणणुं अेह गणीजेरे भ० जिमी जिनपद पामीजे रे, भ० नरभव लाहो लीजे रे, भ० अे आंकणी. उपाध्याय छठे सव्व साहुणं सातमे आठमे नाण, नवमे दर्शन दशमे विणयस्स, चारित्र अग्यारमे जाण रे, भ० ।। २ ।। बारमे ब्रह्मव्रतधारीणं तेरमें किरियाणं, चौदमें तप पंदरम गोयम, सोलसमें नमो जिणाणं रे, भ० ।।३।। चारितस्स सत्तरमें जपीअे, अठ्ठारस्समें नाणस्स, ओगणीशमे नमो सुयस्स संभारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे, भ० ।। ४ ।। अेकासणादि तप देववंदन, गुणणुं दोय हज़ार, सत्यविजय बुधशिष्य सुदर्शन, जंपे अेह विचार रे, भ० ।। ५ ।।

(ज्ञानविमलसूरिकृत)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. श्री वीशस्थानक सज्झाय.

(सारदबुधदाइ–अे देशी)

अरिहंत प्रथम पदे, लोगस्स चोवीश बार, बीजे पद सिद्धा अडवन पनर विचार, पवयणपदे नव सग, सूरि पद छत्तीश, थिविरे दश वाचके, द्वादश वली पणवीश. ॥१॥ त्रुटक–तिम इगवीस अने सगवीश, साधुपद आराधो; नाण पदे पण दंसणे सतसठि, विनयपदे दश साधो, चरितपदे खट् सतर कहीजे, बंभ पदे नव जाणो, किरिया तेर अणे पणवीसा, बारस तप मुनि आणो, ॥२॥ गोयम पदे इगदस लोगस दश जिन नाम, चरितपदे सगदस, नाणे पण अभिराम इम वली पण लोगस, श्रुतपदे काउसग कीजे, पण लोगस वीश, तीर्थपदे प्रणमीजे. ॥३॥ त्रुकट तिम कीजे दोय सहस गुणनस्यु', स्थानक आराधीजे, वीश वार इग विधिशुँ करतां, तीर्थङ्कर पद लीजे, नाम फेर दीसे बहु ग्रंथे, पण परमारथ अेक, उभय टंक आवश्यक जयणा, कीजे धरिये विवेक. ॥४॥ काउसग्गनो विधि जे दाख्यो, तप आराधन हो, शास्त्रमांही ते नवि दीसे तोहीं परंपरा विगते, चोथे अथवा छठ्ठे स्थानक, करतां लहीअे पार, धीरविमल कवि-सेवक नय कहे, तप शिवसुख दातार. इति,॥

श्री वीश स्थानक तपनी विधि.

शुभ मुहूर्त्ते गुरु समीक्षे आ तप विधिपूर्वक शरु करवो. अेक ओली छ महिनामां पूर्ण करवी जोइअे. न थाय तो ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चलती ओली फरीथी शुरु करवी पडे दश वरसमां वीसे ओली पूर्ण करवी जोइअे, दरेक ओली २०-२० उपवास छट्ठ अट्ठमादि, आयंबिल, अेकासणुं, के नोवोथी पण करी शकाय छे. शक्ति होय तो उपवासादिथि ज करवी जोइअे, आ तप (४०० उपवासादि थी) वीस ओलीअे पूर्ण थायपूर्ण थया पछी शक्ति मुजब उजमणुं करवुँ १५ मी ओली 'नमो गोयमस्स' नी छट्ठ तपथी आराधवी जोइअे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीस पदनुं गुणगुं आदि नीचे प्रमाण

	पदोनां नाम	साथिआ	खमास-मणां	काउस-गग	नवकार वाली
१	ॐ नमो अरिहंताणं	१२	१२	१२	२०
२	,, नमो सिद्धाणं	३१	३१	३१	२०
३	,, नमो पवयणस्स	२७	२७	२७	२०
४	,, नमो आयारियाणं	३६	३६	३६	२०
५	,, नमो थेराणं	१०	१०	१०	२०
६	,, नमो उवज्झायाणं	२५	२५	२५	२०
७	,, नमो लोए सव्वसाहूणं	२७	२७	२७	२०
८	,, नमो नाणस्स	५१	५१	५१	२०
९	,, नमो दंसणस्स	६७	६७	६७	२०
१०	,, नमो विणयसंपन्नस्स	५२	५२	५२	२०
११	,, नमो चारित्तस्स	७०	७०	७०	२०
१२	,, नमो बंभवयधारिणं	१८	१८	१८	२०
१३	,, नमो किरियाणं	२५	२५	२५	२०
१४	,, नमो तवस्स	१२	१२	१२	२०
१५	,, नमो गोयमस्स	१२	१२	१२	२०
१६	,, नमो जिणाणं	२०	२०	२०	२०
१७	,, नमो संजमस्स	१७	१७	१७	२०
१८	,, नमो अभिनवनाणस्स	५१	५१	५१	२०
१९	,, नमो सुयस्स	२०	२०	२०	२०
२०	,, नमो तित्थस्स	३८	३८	३८	२०

१ कोइ कोइ स्थले साथिआ वगेरेनी संख्यामां फेरफार आवे छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-: चेदवंदन विध :-

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पड़िक्कमिउं ॥१॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥२॥ गमणा गमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, बोयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंगपणग-दग-मट्टी-मक्कडा संताणा-संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिआ ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चऊरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥७॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउसग्गं ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्त मुच्छाए १ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहिं २ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गं ३ जाव अरिहंताण भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ४ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(एक लोगस्सनो काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा सुधी. न आवडे तो चार नवकार.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइ-स्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि; रिट्ठ-नेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा; चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं? इच्छं

सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुः, कल्पवृक्षोपमानः,
भवजलनिधिपोतः, सर्वसंपत्तिहेतुः
स भवतु सततं वः, श्रेयसे शांतिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-: वीसस्थानकनुं चैत्यवंदन. :-

पहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥
त्रीजे प्रवचन[३] मनधरो, आचारज[४] प्रसिद्ध ॥
नमो थेराणं[५] पांचमे, पाठक[६] गुण छट्ठे ॥
नमो लोए सव्व साहूणं,[७] जे छे गुण गरिट्ठे ॥
नमो नाणस्स[८] आठमे दर्शन[९] मन भावो ॥
विनय[१०] करो गुणवंतनो, चारित्र पद[११] ध्यावो ॥
नमो बंभवयधारिणं,[१२] तेरमे किरियाणं[१३] ॥
नमो तवस्स[१४] चउदमे, गोयम[१५] नमो जिणाणं[१६] ॥
चारित्र[१७] ज्ञान[१८] सुअस्स[१९] ने अें नमो तित्थस्स[२०] जाणी ॥
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुखखाणी ॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।

नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं १ आइगराणं, तित्थयराणं सयं संबुद्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं ३ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोग-पईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ४ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्ग-दयाणं, सरणदयाणं. बोहिदयाणं ५ धम्मदयाणं, धम्मदेस-याणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कव-ट्टीणं६ अप्पडिहय-वरनाणदंसणधराणं, विअट्ट छउमाणं ७ जिणाणं

याणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ८ सव्वन्नूण, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वा-बाह-मपुणरावित्त-सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्तणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ९ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि १०

जय वीयराय ! जयगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिया इट्ठफलसिद्धि १ लोग विरुद्धच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थ करणं च, सुहगुरु जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा,

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहीआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं.

-: चैत्यवंदन. :-

चोवीश पन्नर पीस्तालिशनो, छत्रीशनो करिये ।।
दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन धरीये ।।
पत्र सडसट्ठी दश वळी, सित्तेर नव पणवीश ।।
बार अडवीश लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरोगुणीश ।।
वीस सत्तर अेकावन, द्वादश ने पांच ।।
अेंगोपेरे काउस्सग्ग जो करे, तो जाये भव संच ।।
अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणि लेजो वीश ।।
वीश स्थानक अेम जाणीअे, संक्षेपथी लेश ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाव धरी मनमां घणो, जो एक पद आराधे ।।
जिन उत्तम पद पद्मने, नमी निज कारज साधे ।।

जंकिंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं जिण बिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि १

नमुत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं १ आइगराणं, तित्थयराणं सयं संबुद्धाण पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरी-आणं, पुरिसवर गंध हत्थीण ३ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं ४ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयादयाणं, बोहिदयाणं, धम्म-दयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं, ६ अप्पडिहय-वरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं ७ जिणाण- जावयाण, तिन्नाण, तारयाण, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताण, मोअगाणं, ८ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल मरुअ मणंत -मक्ख-मव्वाबाह -मपुणरावित्ति-सिद्धि गई नाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं, ९ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्ट-माणा, सव्वे तिविहेंण वंदामि ।

(पछी उभा थईने)

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्ग,

वंदणवत्तियाअें पूअणवत्तियाअे सक्कारवत्तियाअे सम्माण-वत्तियाअें, बोहिलाभवत्तियाअे, निरुवसग्गवत्तियाअे, सद्धाअे, मेहाअे, धिइअे, धारणाअें अणुप्पेहाअे वड्ढमाणीअे ठामि काउस्स

अन्नत्थ ऊससिअेणं नीससिअेणं खासिअेणं छीअेणं जंभाइअेणं उडडुअेणं वायनिसग्गेणं भमलीअे पित्तमुच्छाअे, सुहुमेहिं अन्ग संचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी संचालेहिं अेवमाइअेहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं झणेणं अप्पाणं वोसिरामि.

(अेक नवकारनो काउस्सग्ग) पारीने

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः कही थोय कहेवी.

थोय

पूछे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा पूजित अमर सूरिंदा ।। केम निकाचे पद जिणचंदा, किण विध तप करतां भव फंदा, टाले दुरित दंदा ।। तव भाखे प्रभुजी गतनिंदा, सुण गौतम वसुभूति नंदा, निर्मल तप अरविंदा ।। वीश थानक तप करत महिंदा, जिम तारक समुदाये चंदा, तिम अे सवि तप इंदा ।। १ ।।

(पछी लोगस्स कहेवो)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवलि, १ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइंच; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे. २ सुविहिं जपुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासूपुज्जं च; विमलमणंत च जिणं, धम्मं संति च वंदामि. ३ कुंथुं अरं च मल्लिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च. अेवं मअें अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीणजर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु. ५ कित्तय-वंदिय-महिया, जे अे लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहि-लाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु. ६ चंदेसु निम्मलयरा आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु. ७

सव्वलोअे अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्ति-याअे पूअणवत्तियाअे सक्कारवत्तियाअे सम्माणवत्तियाए बो-हिलाभवत्ति-याअे निरुवसग्गवत्तियाअे, सद्धाअे मेहाअे धिइअे धारणाअे अणुप्पे हाअे वड्ढमाणीअे ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊसासिअेणां नीससिअेणं खासिसेणं छीअ`णं जंभा-इअ`णं उड्डुअ`णं वाय-निसग्गेणं भमलीअ` पित्तमुच्छाअ` सुहुमेहिं अ`ग संचालेंहिं सुहुमेहिं खेल संचालेंहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेंहिं अ`बमाइअ`हिं आगरेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामिं.

(अ`क नवकारनो काउस्सग्ग) पारीने बीजी थोय

प्रथम पदे अरिहंत नमीजे, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे आचारज थेर ठविजे ।। उपाध्याय ने साधु ग्रहीजे, नाण दंसण पद विनय वहीजे, अगीयारमें चारित्र लीजे । बंभवयधारीणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणीजे, करियाणं तवस्स करीजे; गोयम जिणाणं लहीजे ।।
चारित्र नाण श्रुत तित्थस्स कीजे, त्रीजे भव तप करत सुणीजे,
अे सवि जिन तप लीजे ।। २ ।।

पुक्खरवर दीवड्ढे, धायइसंडे य जंबुद्दीवे य, भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि. १ तमतिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स, सुरगणनरिंद महियस्स, सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय मोहजालस्स. २ जाइ-जरा-मरण-सोग पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल-विसाल-सुहा-वहस्स; को दव दाणव-नरिंदगणच्चियस्स धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं, ३ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमअे नंदी सया संजमे, देवं-नाग-सुवन्न-किन्नर गण-स्सब्भूअ -भावच्चिअे, लोगो जत्थ पइट्ठओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सामओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ४

सुअस्स, भगवओ करेमि काउस्सग्गं. वंदणवत्तियाअे पूअणवत्तियाअे सक्कार-वत्तियाए, सम्माण-वत्तियाए, बोहिलाभ वत्तियाए, निरुवसग्ग-वत्तियाअे सद्धाए मेहाअें धिईअें धारणाअे अणुप्पेहाअे वड्ढमाणीअे ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिअेणं, नीससिअेणं खासिअेणं छीअेणं जंभाअेणं उड्डुअेणं वायनिसग्गेणं भमलीअें पित्त-मुच्छाअे, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं अेवमाइअेहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोऐणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि.

अेक नवकारनो काउस्सग्ग पारिने त्रीजी थोय

आदि नमो पद सघले ठवीश, बार पन्नर बार वलीं छत्रीश, दश पणवीश सगवीश ।। पांच ने मइसठ तेरे गणीश, सत्तार नव किरिया पचवीश, बार अट्ठातीश चउवीश ।। सित्तेर इगवन्न पीस्तालीश, पांच लोगस्स काउस्सग्ग कहीश, नोकारवाली वीश ।। अेक अेक पदे उपवास ज वीश, मास खटे अेक ओली करीश, इम सिद्धांत जगीश ।। ३ ।।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार–गयाणं परंपरगयाणं, लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं १ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं २ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स संसार सागराओ तारेइ नरं व नारिं वा ३ उज्जित सेल-सिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआजस्स, तं धम्म-चक्कवट्टि, अरिठ्ठनेमिं नमंसामि ४ चत्तारि अठ्ठ दस दोअ, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं, परमठ्ठ-निट्ठि-अठ्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।५।।

वेयावच्चगराणं संतिगराण सम्मदिट्ठि समाहिगराण करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्त मुच्छाए १ सुहुमेहिं

अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३ जाम अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ४ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झानेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अेक नवकारनो काउस्सग्ग) पारीने

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः

शक्ते अेकासणुं तिविहार छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार पडिक्कमणां दोय बार ॥ इत्यादिक विधि गुरुगम धार, अेक पद आराधन भव पार, उजमणुं विविध प्रकार ॥ मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाइ शासन रखवाल, संघविघन अपहार ॥ खिमाविजय जस ऊपर प्यार शुभ भवियण धर्म आधार, वीरविजय जयकार ॥४॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं १ आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवर गंध हत्थीणं ३ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ४ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणँ, बोहिदयाणं ५ धम्मदयाणँ, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणँ, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ६ अप्पडिहय-वरनाणदंसणधराणं, विअट्ट छउमाणं ७ जिणाणं जावयणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोअगाणं ८ तब्बाणनूणं, सव्वदरिसोणं सिवा मयल मरुअ मणत-मक्खयमव्वाबाह म णरावत्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपताण नमो जिनणं चिअभयाणं ९ जे अ अइआ सिद्धा,जे भविस्संति ण्णागएकले, संदइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि १०

(पछी उभा थइने अरिहंत चेइआणं कहेवुं)

अरिहंत केइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाअे पूअणवत्तियाअे सक्कारवत्तियाअे सम्नाणवत्तियाअे, बेहिलाभवत्तियाअे निरुसग्गवत्तियाअे, सद्धाअे, मेहाअें, धिइअे धारणाअें अणुप्पपेहाअे वड्ढमाणीअे, ठामि काउस्सगं ।

अन्नत्थ उससिअेणं नीससिअेणं खासिअेणं छीअेणं जंभाइअेणं उड्डुअेण वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तामुच्छाअें, सुहुमेहि अंगसंचालर्लेहि सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिटिठ संचालेहि अेवमाइअेहिं आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गं जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न लाव कायं ठाणेणं मोनेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

[अेक नवकरानो काउस्सग्ग] पारीने

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः कही थोय कहेंवी.

थोय

वीश स्थानक तप विश्वमां मोटो, श्री जिनवर कहे आपजी ।।
बांधे जिनपद त्रीजा भवमां, करोने स्थानक जापजी ।। थया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थशो सवि जिनवर अरिहा, अे तपने आराधं जी ।। केवलज्ञान दर्शन सुख पाम्या, सर्वे टालो उपाधिजी ।।१।।

(पछी लोगस्स कहेंवो)

लोगस्स उज्जोनगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवलि. १ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्हं वंदे. २ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च, विमलमणंटं च जिणं धम्मं संतिं च वन्दामि. ३ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च, वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च अेवं मअे अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीणजर- मरणा, चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा, मे पसीयंतु ५ कित्ति-वंदिय महिया, जे अे लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु । ६ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७

अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तियाअे पूअणवत्तियाअे सक्कारवत्तियाअे सम्माणवत्तियअे बोहिलाभवत्तियाअे निरुवसग्गवत्तियाअे, सद्धाअे मेहाअे धिइअे धारणाअे अणुप्पेहाअे वड्ढमाणीअे ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिअेणं नीससिअेणं खासिअेणं छीअेणं जंभाइअेणं उड्डुअेणं वायनिसग्गेणं भमलीअे पित्तमुच्छाअे, सुहुमेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं अेवमाइअेहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज में काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झणेणं अप्पाणं वोसिरामि.

(अेक नवकारनो काउस्सग्ग) पारीने बीजी थोय कहेवी।

अरिहंत सिद्ध पवयण सूरि स्थाविर, वाचक साधु नाणजी,
दर्शन विनय चरण बंभकिरिया, तप करो गोयल ठाणजी ।।
जिनवर चारित्र पंचविध नाण, श्रुत तीर्थ अेह नामजी ।।
अे वीश स्थानक आराधे ते शिवपद धामजी ।। २ ।।

(पछी पुक्खरवरद्दीवड्ढे कहेवुं)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइ संडे य जंबुदीवे य, भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि । ।।१।। तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिय मोहजालस्स । जाई जरा मरण सोग पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स, को देव दाणव नरिंद गणच्चियस्स धम्मस सारमुलब्भ करे पमायं । ।।३।। सिद्धे भो पयओ णमो, जिणमअे नंदी सया संजमे, देवं नाग सुवन्न किन्नर–गणस्सब्भूअ भावच्चिअे, लोगो जत्थ दईट्ठिओ जागमिणं तेलुक्कमच्चासुर, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तर वड्ढउ ।। ४ ।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदणवत्तियाअे पूअणवत्तियाअे सक्कारवत्तियाअे सम्माणवत्ति-याअे बोहिलाभवत्तियाअे, निरुवसग्गवत्तियाअे, सद्धाअे, मेहाअे, धिइअे, धारणाअे अणुप्पेहाअे वड्ढमाणीअे, ठामि काउस्सग्गं,

अन्नत्थ, ऊससिअेणं नीससिएणँ खासिअेणं छीअेणं जंभाइअेणं उड्डुअणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं अेवमाईअेहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं ननुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(अेक नवकारनो काउस्सग्ग करवो) पारीने त्रीजी थोय कहेवी ।

दोय काल पडिकमणुं पडिलेहण, देववंनद त्रण वारजी ।। मोकारवाली वीश गुणीजे, काउस्सग्ग गुण अनुसारजी ।। चारसो उपवास करी चित चोखे, उजमणुं करो सारजी, पडिमा भरावो संघ भक्ति करो, अे विधि शास्त्र मोझारजी ।।३।।

(पछी सिद्धाण बुद्धाणं कहेवुं)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारयागं परंपरगयाणं; लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सुव्व सिद्धाणं । ।।१।। जो देवाण वि देवो जं देवा पंजलि नमंसंति, तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।२।। इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स, संसार सागराओ तारेइ नरं व नारिं वा । ।।३।। उज्जित सेलसिहरे, दिक्-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खानाणं निसीहिआ जस्स, तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमसामि ।।४।। चत्तारि अट्ठ दश दो अ, वंदिआ जिणवरा चउव्विसं, परमट्ठ निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धी मम दिसंतु । ।।५।। वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए १ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठसंचालेहिं २ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि; ४ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।

(एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः कही थोय कहेवी.

श्रेणिक सत्यकी सुलसा रेवती, देवपाल अवदातजी ।। स्थानक तप सेवा महिमाए, थया जगमांहि विख्यातजी ।। आगम विधि सेवे जे तापिया, धन्य धन्य तस अवतारजी ।। विघ्न हरे तस शासनदेवी, सौभाग्य लक्ष्मी दातारजी ।।४।।

(पछी बेसीने नमुत्थुणं कहेवुं)

नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं १ आइगराणं तित्थयराणं सयं संबुद्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं. पुरिससीहाणं. पुरिसवरपुंडरीअाण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसवर गंध हत्थीणं ३ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगज्जोअगराणं ४ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं बोहिदयाणं, ५ धम्मदयाणं धम्मदेसयाण धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ६ अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं विअट्ट छउमाणं ७ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ८ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिव-मयल मरुअमणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धि-गइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ९ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥९॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइं ताइं वन्दे, इह सन्तो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंड विरयाणं १

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री वीश स्थानकनु स्तवन

हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मांगुं वचन विलास जो,
वोशेरे तप स्थानक महिमा गाइशुं रे लोल
हांरे मारे प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चोवीश जो,
बीजे रें सिद्ध स्थानक पंदर भावशुं रे लोल. ॥१॥
हांरे मारे त्रीजे पवयण गणो लोगस्स पीस्तालीश जो,
चोथेरे आयरियाणं छत्रीशनो सही रे लोल,
हांरे मारे थेराणं पद पांचमे दश उदार जो,
छठें रे उवज्झायाणं पचवीशनो सही रे लोल. ॥२॥
सातमे नमो लोअे सव्व साहु सत्तावीश जो,
आठमें नमो नाणस्स पंच भावशुं रे लोल.
हांरे नवमे दरिसण सडसठ मनने उदार जो,
दशमे नमो विणयस्स दश वखणीअें रे लोल, ॥३॥
हांरे अग्यारमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तर जो,
बारमें नमो बंभस्स नव गणो सही रें लोल,
हांरे किरियाणं पद तेरमे वली पचवीश जो,
चौदमे नमो तवस्स बात गणो सहीं रे लोल ॥ ४ ॥
हांरे पंदरमे नमो गोयमस्स अठ्ठावीश जो,
नमो जिणाणं चउवीश गणशुं सोलमेरें लोल,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तारमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तरे जो,
नाणस्स नो पद गणशुँ अेकावन अढारमें रे लोल ॥ ५ ॥
हांरे ओगणीशमें नमो सुअस्स वीश पीस्तालीश जो,
वीशमे नमो तित्थस्स वीश प्रभावशु रे लोल,
हांरे अें तपनो महिमा चारशें ऊपर वीश जो,
षट् मासे अेक ओली पूरी कीजियेरे लोल, ॥ ६ ॥
हांरे तप करतां वळीं गणीअे होय हृदार जो,
नवकारवाली वीशे स्थानक भावशु रे लोल,
हांरे प्रभावना संघ स्वामीवच्छल सार जो,
उजमणा विधी कीजे विनय कीजिअेरे लोल, ॥ ७ ॥
हांरे अे तपनो महिमा कहे श्री वीर जिनराय जो,
विस्तारे इम संबंध गोयम स्वामीने रे लोल
हांरे तप करतां वली तीर्थंकर पद होय जो,
देव गुरु इम कांति स्तवन सोहामणो रे लोल, ॥ ८ ॥

(पछी जयवीयराय कहेवा)

जयवीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुम पभावओ भयवं! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोग विरुद्ध-च्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च सुहगुरु जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा. २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआअे मत्थअेण वंदामि.

इच्छाकारेंण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करु? इच्छं.

बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजे भावे,
सिद्ध आठ गुण समरतां दुख दोहग जावे, १

आचारज गुण छत्रीस, पचवीस उवज्झाय,
सत्तावीस गुण साधुना, जपतां सुख थाय २

अष्टोत्तर शत गुण मलीअे, इम समरो नवकार.
धीरविमल पंडित तणो, नय प्रणमे नित सार. ३

जंकिंचि नाम तित्थं सग्गे पायलि माणुसे लोए; जाइं जिण बिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि १

नमुत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं १ आइगराणं, तित्थयराणं सयं संबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं ३ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ४ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ५, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ६ अप्पडिहय-वरनाणदंसण-धराणं, विअट्ट छउमाणं ७ जिणाणं--जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुत्ताणं मोअगाणं ८ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसोणं, सिव-मयल मरु-अमणंत मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धि गइ-नामघेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ९ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

जय वीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिया इट्ठफलसिद्ध १ लोग विरुद्धच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थ करणं च, सुहगुरु जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा,

वारिज्जई जइवि नियाण बंधणं वीयराय! तुह समये तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं, ३

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ. समाहि मरणं च बोहिलाभो अ. संपज्जउ मह अेअं, तुह नाह पणाम करणेणं ४

सर्वमंगल–मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाओ निसीहिआओ मत्थअेण वंदामि. अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सवारमां ऊपर मुजब देववंदन करीने उपरथी सज्झाय कहेवी, बपोरे तथा साँजे सज्झाय कहेवी नहीं.

इति देववंदन विधि.

—: पच्चक्खाण पारवानी विधि :—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पड़िक्कामिउं ।।१।। इरियावहियाए विराहणाए ।।२।। गमणा गमणे ।।३।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिगपणग-दग-मट्टी-मक्कडा संताणा-संकमणे ।।४।। जे मे जीवा विराहिआ ।।५।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।।६।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणँ संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।७।।

तस्स उत्तारी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं मिसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं। ।१।।

अन्नत्थ ऊससिअेणं नीससिअेणं खासिअेणं छीअेणं, जंभाइअेणं उड्डुअेणं वायनिसग्गेणं भमलीअे पित्तमुच्छाअे, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अेवमाईअेहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि.

(एक लोगस्सनो काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा सुधी. न यावडे तो चार नवकार.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि; रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा; चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदेय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: जगचिंतामणि चैत्यवंदन :—

जगचिंतामणि! जगनाह! जगगुरु! जगरक्खण! जगबंधइ! जगसत्थवाह! जगभाव विअक्खण!, अट्ठावयसंठविअरूव! कम्मट्ठ विणासण!; चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहय सासण! १ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढसंघयणि, उक्कोसय सत्तारिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ; नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नवसाहु गम्मइ संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडि सहस्सदुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि. २ जयउ सामिय! जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि; उज्जिंति पहुनेमिजिण! जयउ वीर! सच्चउरिमंडण! भरुअच्छहि मुणिसुव्वय! मुहरि पास दुह दुरिअ खंडण! अवर विदेहिं तित्थयरा चिहुं दिसि विदिसि जिंके वि, तीआणागय संपइअ वंदु जिण सव्वेवि. ३ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खाछप्पन्न अट्ठकोडीओ; बत्तीसय बासीयाइं, तिअलोए चेइए वंदे. ४ पनरस कोडि सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना छत्तीस सहस्स असीइं, सासय बिंबाई पणमामि. ५

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं जिणं बिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि १

नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं १ आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवर गंध हत्थीणं ४ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणँ ४ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ५ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहिणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ६ अप्पडिहय-वरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ७ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ८ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वा-बाह-मपुणराविति-सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं सपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ९ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि १०

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ, सव्वाइं ताइं वन्दे, इह सन्तो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाअें निसीहिआअे मत्थअेण वंदामि.

जावंत केवि साहु, भरहेरवय महाविदेहे अ, सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंड विरयाणं १

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ।

—: उवसग्गहरं :—

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर विसनिन्नास, मंगल कल्लाण आवासं १ विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ; तस्स गह रोग मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२ चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ; नर ति-
रिऐसुवि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं ३तुम सम्मते लद्धे
चिंतामणि कप्पपायायबभहिअे; पावंति अविग्धेणं, जीवा
अयरामरं ठाणं: ४ इअ संथुओ महायस ! भत्तिभर निबभरेण
हिअअेण; ता देव ! दिज्ज बोहिं. भवे भवे पासजिणचंद ! ५

जायवीयराय ! जागगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं,
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इठ्ठफल सिध्धी, १ लोग विरु-
द्धच्चओ, गुरुजाणपूआ परत्थरणं च, सुहगुरु जोगो तव्वयण,
सेवणा आभवमखंडा २वारिज्जइ जाइ वि नियाण, बंधणं वीयराय
! तुम सामअे, तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं.
३ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, सामाहि मरणं च बोहिलाभो अ
सपज्जउ महअेन्अ, तुहनाह पणाम करणेणं४ सर्वा मंगल मां-
गल्यां सर्वा कल्याण कारण प्रधानं सर्वा धर्माणं, जैनं जयति
शासनम्. ५

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाअे निसीहिआअे
मत्थअेण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसाह भगवन् ! सज्झाय करुं ?इच्छं, नमो
अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवाज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं, अेसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्प-
णासणो; मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-: सज्झाय :-

मन्ह जिणाणं आणं, मिच्छं परिहरह धरह समत्तं;
छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं. १
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ;
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ यजणा अ. २
जिणपूआ जिण थुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं;
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य. ३
उवसम विवेग संवर, भासासमिइ छजीव करुणा य;
धम्मिअजण संसग्गो, करणदमो चरण पणिणामो. ४
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे;
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरुवअेसेणं. ५

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाअे निसीहिआए मत्थअेण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं, कही मुहपत्ति पडिलेहवी, पछी

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाअे निसीहिआअे मत्थअेण वंदामि,

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण पारुं ? यथाशक्ति इच्छामि खमाममणो वंदिउ जावणिज्जाअें निसीहिआअें मत्थअेण वंदामि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण पार्यु ? तहत्ति, कही मुठी बाली कटासणा ऊपर स्थापी अेक नवकार गणवो.

नमो अरिहंताणँ, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोअे सव्वसाहूणं अेसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवइ मंगलं.

उपवास नुं पच्चक्खाण पारवा माटे

सूरे अग्गअे अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाण कर्यु तिविहार पोरिस.

साढपोरिसि (सूरे उग्गअे पुरिमड्ढ) मुठ्ठि सहिअं पच्चक्खाण कर्यु पाणहार, पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं किट्टिअं आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

(पछी मुठो वालो अेक नवकार गणवो)

अेकासणुं-बियासणुं-आयंबिल नुं पच्चक्खाण पारवा माटे

अग्गअे सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं, साढपोरिसिं उग्गअे पुरिमड्ढ अवड्ढ) मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाण कर्यु चोविहार ⦾ [आयंबील, अेकासणुं] बियासणुं पच्चक्खाण कर्यु तिविहार, पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोरिअं, तीरिअं किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कड

⦾ जे पच्चक्खाण कर्यु होय ते बोलवु.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पछी मुठी वाली अेक नवकार गणवो.)

इति पच्चक्खाण पारवानी विधि

पाणाहारनुं पच्चक्खाण

पाणहार दिवस चरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणँ सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे .

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

:- शुद्दि-दर्शन :-

[पहले शुद्ध करने के बाद पीछे पुस्तक को -
- विधिमें युक्त करें]

अशुद्ध:	शुद्ध:	पेज:	लाइन:
तिशयेश्चराय	तिशयेश्वराय	३	६
ज्ञानना	ज्ञाना	४	८
ममुष्यायु:	मनुष्यायु:	५	७
रहिता	रहितायां	,,	८
दत्त	दत्ता	६	१६
व्रतस्ताय	व्रतयुक्ताय	,,	१९
आपरियाणं	आयरियाणं	८	५
वजनयोग	वचनयोग	१४	१२
चक्षरिन्द्रिचासम्यक्	चक्षुरिन्द्रियापाय्	१६	७
–	सम्यक्	–	–
सिश्रींत	सितश्री	१७	३
अवथि	अवधि	,,	११
हीमान	हीयमान	,,	१२
चारिवधर्म	चारित्रधर्म	१८	१८
धराक	धारक	२०	८
लक्षषण	लक्षण	,,	९
संलाप	आलाप	,,	१२
आहार	गंधपुष्पादि	,,	१८
सत्नत्रयीणां	रत्नत्रयीणां	२१	११
वान्द्रादि	चान्द्रादि	२३	५
प्रातेभ्यो	प्राप्तेभ्यो	२३	२१
प्रातम:	प्राप्तेभ्यो नम:	२४	१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अशुध्द :	शुध्द :	पेज :	लाइन :
प्रातेभ्यो	प्राप्तेभ्यो	२५	५
अर्वत :	सर्वत :	२७	७
प्रायश्रित	प्रायश्चित	३०	१८
असेवानरुप	असेवावनरुप	३१	२०
लायेन	कायेन	३२	८
कायिक	कायिकी	३३	७

[शेष २४ पदमें की कर देना.]

प्रभाम	प्रभास	३६	१७
जिनेश्चराय	जिनेश्वराय	३७	३

[शेष वीश पदमें ऐसा कर देना]

विरमणव्रतधराय	विरताय	३९	३
श्रतज्ञानाय	श्रुतज्ञानाय	४१	१६

[शेष सब पदमें श्रुत कर देना]

अनुष्ये	मनुष्ये	४३	१४
ससामश्रत	समासश्रुत	४४	१७
सदयमोज्ञ	सदयमनोज्ञ	४७	११
विश्रसनीय	विश्वसनीय	,,	१६
नागवर्त	नागतवर्त	४८	५
धर्माचर्स्यस्य	धर्माचार्यस्य	,,	१३
शसननी	शासननी	,,	१९
दद्मने	पद्मने	५१	१०
जाव	जाण	५२	४
विणयस्य	विणयस्स	५३	८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अशुध्द :	शुध्द :	पेज :	लाइन
थेरणं	थेराणं	५३	३
जचवीश	पचवीस	,,	४
उनमणा	उजमणा	५४	२
विश्रमां	विश्वमां	५५	११
देवनदब	देववंदन	,,	१९
चरसो	चारसो	,,	२०
शस्त्र	शास्त्र	५६	१
जिमी	जिरे	,,	१०
लोगस	लोगस्स	५३	९
त्रुकट	त्रुटक	,,	१२
वेदवंदन विध	देववंदन विधि	६०	१
संजालेहिं	संचालेहिं	,,	१८
आनु :	भानु :	६१	१३
सतस	सततं	,,	२१
पार्श्र	पार्श्व	,,	,,
सप्न	सव्व	६२	५
निवय	विनय	,,	७
जाइं	जाइं जिण	,,	१३
पुरिसुत्तमाणं	पुरिसुत्तमाणं पुरिससिहाणं	,,	२५
वित्त	वित्ति	६३	३
त्तणं	त्ताणं	,,	,,
जावणिज्जए	जावणिज्जाअे	,,	२०
उसम	उत्तम	६४	२
भनवंताण	भगवंताणं	,,	५
दत्थीथं	हत्थीणं	,,	५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अशुध्द :	शुध्द :	पेज :	लाइन :
दयादयाणं	दयाणं	६४	९
दयाणं	दयाणं, धम्मदेसयाणं	,,	१०
नुद्याण	मुत्ताणं	,,	१३
मवख	मक्खय	,,	१४
षत्तियाए	वत्तियाए	,,	१९
झणेण	झाणेणं	६५	६
ममवसरण	समवसरण	,,	९
ज	च	६५	२०
कित्तय	कित्तिय	६६	३
आगरेहिं	आगारेहिं	,,	२५
पुक्खगवर	पुक्खरवर	६७	४
जंबुद्दीवे	जंबुदीवे	,,	,,
सामओ	साsओ	,,	१२
मरमठ्ठ	परमठ्ठ	६८	१७
नीमसिएणं	नीससिएणं	,,	२०
जाम	जाव	६९	३
लोनाहाणं	लोगनाहाणं	,,	१५
लोगईवाणं	लोगपईवाणं	,,	१६
द्योपज्जोअगराणं	लोगपज्जोअगराणं	,,	,,
धम्मदयणं	धम्मदयाणं	,,	१७
जावयणं	जावयाणं	,,	२०
जिनणं	जिणाणं	७०	३
चिअभयाणं	जिअभयाणं	,,	,,
जे	जे अ	,,	,,
ण्पागएकले	णागएकाले	,,	४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अशुध्द :	शुध्द :	पेज :	लाइन :
संदइ	संपइ	७०	४
केइआणं	चेइआणं	,,	६
निरुसग्ग	निरुवसग्ग	,,	८
अणुप्पपे	अणुप्पे	,,	,,
नायनिसग्गेणं	वायनिसग्गेणं	,,	११
न ताव	न पारेमि ताव	,,	१४
नमऽर्हम्	नमोऽर्हत्	,,	१७
उज्जोनगरे	उज्जोअगरे	७२	४
चंदप्हं	चंदप्पहं	,,	६
वंदामिठ्ठिनेमिं	वंदमिरिठ्ठनेमिं	,,	९
क्रित्ति	कित्तिय	,,	११
अव्वलोअे	सव्वलोअे	,,	१५
वत्तियअें	वत्तियाए	,,	१६
नीसिअेणं	नीससिअेणं	,,	१९
भसलीअें	भमलीअे	,,	२०
गोयल	गोयम	,,	७
सारमुलब्भ	सारमुवलब्भ	,,	१६
दईट्ठिओ	पईठ्ठिओ	,,	१८
ननुक्कारेणं	नमुक्कारेणं	७३	८
देववंनद	देववंदन	,,	११
पारयागं	पारगयाणं	,,	१६
दिठ्ठसंचालेहिं	दिटिठ्संचालेहिं	७४	८
संवध्दाणं	संबुध्दाणं	,,	२१
पुंरीडआणं	पुंडरिआणं	,,	,,
लोगज्जोअगराणं	लोगपज्जोअगराणं	७५	२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अशुध्द:	शुध्द:	पेज:	लाइन:
तिविहृण	तिविहेण	७५	११
सत्तवीश	सत्तावीश	७६	१०
वखणीअें	वखाणीअें	,,	१३
मिसल्ली	विसल्ली	८०	१७
पढसंधयणि	पढमसंधयणि	८२	५
परत्थरणं	परत्थकरणं	८४	८
भजणा	जयणा	८५	५
अग्गअे अब्भत्तठ्ठं	उग्गए उपवास	८६	७
पोरिस	पोरिसि	,,	,,
अग्गअे	उग्गए	,,	१४
उग्गए	सूरे उग्गए	,,	१५
सोरिअं	सोहिअं	,,	१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्य सूर्य का प्रकाश हेतू

जैन धर्म के प्राचीन सिद्धांतका ज्ञान प्राप्त करने हेतु आपके घरमे लब्धि कृपा मासिक का आगमन होना जरूरी है। जिनका चंदा वार्षीक रु. ११, द्विवार्षीक रु. २१, पंचवार्षीक रु. ५१, दशवार्षीक रु. ८१, आजीव रु. १३१

आजहि आप शीघ्र M. O. से भेज देना जरूरी समझलो।

पता– "लब्धिकृपा" सी. एम्. शाह
वाणीयावाड, छाणी ३९१७४०

प्राचीन संग्रह का उपयोगी प्रकाशन

रोज देव वंदन, प्रतिक्रमण मे सभी को उपयोगी स्तवने, चैत्य वंदने, संज्जाऐ, स्तुतिऐं और नेमनाथजी के सलोका आदि के लीये २५० पेजका प्लॅस्टीक कवरवाला "आवश्यक सज्जाय संग्रह" बुक आप शीघ्र प्राप्त कर ले। मूल्य– पोस्टेज के साथ सिर्फ रु. ५

पता– भुवन भद्रंकर साहित्य प्रचार केंद्र
V. V. VORA
३४, कृष्णप्पा नायकन स्ट्रीट, मद्रास ६०० ००१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीतरागाय नमः महावीर जैन आराधना के ... नगर, पिन-382

माँ-बापको भूलो नहि !

नित किया प्यार जिन्होने उन पावन चरण को भूलो नही ।
दीपक बनो उनकी राहपर माँ-बाप को भूलो नही ॥ धृ ॥
लाख है एहसान उनके ऐसे मेहरबाँ कोई नही ।
अनंत दुख ताप साहकर तुम्हे दिखाई दुनिया नई ।
भले ही भूलो तुम सबको इन अमृत दाताको न भूलो ।
भुके रहकर तुम्हे खिलाया वो पावन चरण नित छुलो ।
संगदील बनकर हृदयको ठेस उनकें पहुँचाना नही ।। १ ।।
नाजोंसे पालकर बडा किया पलकोंपे झुलाया है तुमको ।
एहसान मंद रहो सदा भूलकरभी न भुलो कभी उनको ।
है खाँक कमाई लाखकी गर भूल गये जो तुम उनको ।
है आँस सबही तुम उनकी जो होगी नीज सुतसे तुमको ।
जैसी करणी वैसी भरणी याद रहे कभी भूलो नही ।। २ ।।
खुद पीकर घुँट आँसुओंके तुम्हे चैनकीं नींद सुलाई है ।
खुद चलकर काँटोपे तुम्हारे पगपग फुल बिखैरे है ।
है अैसे पावन माँ-बाप जिनकी महानताका अंत नही ।
है सेवामें स्वर्ग उन्हीके सुख शांती भी मिले वही ।
धनसें मिलत सब जगतमें माँ-बाप कहीं मिलत नही ।। ३ ।।

कवि- **सुधांशु** अनु. **हिरालाल शाह, कराड**

सहायक

शा. तिलोकचंदजी बीजगजी भंडारी कराड.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org